वर्ष: 2021-22
अंक-द्वितीय (मार्च 2022)

धरा गुर्जरी

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा – II) गुजरात

कार्यालय, प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) अहमदाबाद

लक्ष्मी विलास महल

वडोदरा के शाही परिवार का निवास, लक्ष्मी विलास महल उन्नीसवीं सदी में बनाया गया था। 500 एकड़ में बना यह महल आकार में बकिंघम पैलेस का चार गुना है। इसका विस्तृत अंदरूनी भाग सुंदर मोज़ैक, झूमर और कलाकृतियों से सुसज्जित है तथा यहाँ हथियारों और कलाकृतियों का प्रभावशाली संग्रह है। प्रसिद्ध कलाकार, राजा रवि वर्मा द्वारा बनाए गए चित्र महल को सुशोभित करते हैं।

इस महल का निर्माण इंडो-सारासेनिक शैली में किया गया था, जिसमें गुंबद, टकसाल और मेहराब शामिल हैं। यह महल विशाल पार्क जैसे मैदानों के मध्य में स्थित है, जिनमें एक गोल्फ़ कोर्स भी शामिल है।

परिसर में स्थित नवलखी बावड़ी राजाओं द्वारा निर्मित प्राचीन जल संसाधन प्रणाली का एक सुंदर उदाहरण है। परिसर के भीतर अन्य इमारतों में बैंक्वेट्स एंड कन्वेंशन सेंटर, मोती बाग पैलेस और महाराजा फतेह सिंह संग्रहालय भवन शामिल हैं।

यहाँ मोती बाग क्रिकेट ग्राउंड, बड़ौदा क्रिकेट एसोसिएशन का कार्यालय और एक दुर्लभ इनडोर टीक के फर्श वाला टेनिस कोर्ट और बैडमिंटन कोर्ट भी स्थित हैं।

धरा गुर्जरी

अंक-2 वर्ष: 2021-22

संरक्षक:

श्री एच. के. धर्मदर्शी, प्रधान महालेखाकार

श्री विजय एन. कोठारी, प्रधान निदेशक

संपादक मंडल:

श्रीमती मोनिका दवे, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

डॉ. संदीप कुमार बाजपेई, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री मनोज कुमार बघेला, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री रवीन्द्र सचान, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सुश्री ममता सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

संपादकीय

पिछले अंक की भांति प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) गुजरात एवं प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), अहमदाबाद के कार्यालयों की संयुक्त हिन्दी पत्रिका "धरा गुर्जरी" का वर्ष 2021-22 का द्वितीय अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें बहुत प्रसन्नता हो रही है।

गुजरात में स्थित हमारे कार्यालय की इस पत्रिका के आवरण पृष्ठ तथा पार्श्व पृष्ठ में राज्य की संस्कृति की झलक दर्शाते वास्तुकला, हस्तकला तथा मेलों और त्योहारों के विवरण को समाविष्ट करने के प्रयास को जारी रखा है। कार्यालय के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक अपने अनुभवों, संस्मरणों, विचारों को विभिन्न लेखों, तथा कविताओं के माध्यम से व्यक्त कर सराहनीय योगदान दिया है।

पत्रिका में सम्मिलित रचनाओं में जहां एक ओर "क्रिप्टोकरेंसी" और "वीर बाल दिवस" जैसे ज्ञानवर्धक लेख शामिल हैं, वहीँ दूसरी ओर राज्य के विभिन्न शहरों के बारे में रोचक जानकारी प्रदान करते हुए लेख भी हैं। साथ ही जीवन से संबंधित कई लेख जैसे "टालमटोल", "फ़ोटो प्रेम, तथा "मैं, मोटापा और मन:स्थिति" जैसे व्यंग्य भी हैं, जो इस पत्रिका में साहित्य की विभिन्न विधाओं का समावेश सुनिश्चित करते हैं।

पाठकों के अमूल्य सुझाव इस पत्रिका को और बेहतर बनाने के प्रक्रिया में उत्प्रेरक की भूमिका निभाते हैं और रचनाओं पर उनके प्रतिभाव रचनाकारों को प्रोत्साहित करते हैं। आशा है भविष्य में भी हमें पाठकों का स्नेह, सहयोग और मार्गदर्शन मिलता रहेगा।

संपादक मण्डल एवं संरक्षक मण्डल कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) तथा कार्यालय प्रधान निदेशक के सदस्यों का कार्यालय के सदस्यों का आह्वान करते हैं कि भविष्य में भी अधिकाधिक संख्या में स्तरीय स्वरचित रचनाएँ प्रदान करने के क्रम को जारी रखें।

अनुक्रमणिका

क्रम	रचना का नाम	रचनाकार	विधा	पृष्ठ
1.	परिंदों की परवाज़	श्री अनिल बेनीवाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	कविता	1
2.	जम्हाइयों से ये पल	श्री अभिषेक कुमार, हिन्दी अधिकारी	कविता	2
3.	मैं, मोटापा और मन:स्थिति	श्री अभिषेक पँवार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	व्यंग्य	3
4.	आज़ादी के 75 वर्ष और हम	श्री अमनदीप, एम.टी.एस.	कविता	6
5.	मेरा स्थानांतरण वृतांत : पटना से अहमदाबाद	श्री अमित कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	8
6.	भैया जी का हुआ अवतार	श्री कश्यप व्यास, पर्यवेक्षक	कविता	10
7.	ज़िंदगी के दो हिस्से : कभी तेरे कभी मेरे	श्रीमती कुसुम लता, क.हिन्दी अनुवादक	कविता	11
8.	वीर बाल दिवस	श्री घनश्याम बिहारी शर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	12
9.	किसी के लिए कोई रुकता नहीं	श्री चिन्टू एम. गुप्ता, लेखापरीक्षक	कविता	14
10.	मितव्ययता आज की आवश्यकता	श्री जितेंद्र कुमार खत्री डाटा एन्ट्री आपरेटर	लेख	15
11.	नटखट विधार्थी	श्री तारक कुमार दास लेखा परीक्षक	कविता	17
12.	आसमान बाकी है	श्री दीपेश गुप्ता, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	कविता	18
13.	कब तलक ये कब तलक	श्री प्रवीण कुमार झा सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	19
14.	एक एहसास जो पहले कभी न हुआ	श्री प्रशांत कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	21
15.	बचपन	श्री बिनय कुमार, लेखा परीक्षक	कविता	24
16.	टालमटोल	श्री मनोज कुमार बाघेला, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	25
17.	अधिक विकल्प, अधिक समस्याएं	श्रीमती मोनिका दवे, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	33

18.	बाबू जी	श्री रवि रंजन, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	कविता	36
19.	क्रिप्टोकरेंसी	श्री राजीव कुमार गर्ग, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	38
20.	फरियाद	श्री राजेश कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	कविता	40
21.	अहमदाबाद इकोनॉमिस्ट इंटेलीजेंट यूनिट (ई.आई.यू.) की सूची में	श्रीमती रीना अभ्यंकर, पर्यवेक्षक	लेख	41
22.	चाय	श्री रुपेश रंजन तिवारी, लेखापरीक्षक	कविता	44
23.	ख़ुशी क्या है ...???	सुश्री रेशमा दतवानी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	45
24.	कृषक –जीवन	श्री शिवानंद, क.हिन्दी अनुवादक	कविता	48
25.	महात्मा की भूमि गुजरात में मेरा अनुभव	सुश्री शैलजा पांडे, उप महालेखाकार (भूतपूर्व)	लेख	49
26.	गंगा का अभियोग	सुश्री शैलजा पांडे, उप महालेखाकार (भूतपूर्व)	कविता	51
27.	जल संकट	श्री शैलेश देसाई, लेखापरीक्षक	लेख	52
28.	हमारी खंभात यात्रा	श्री संदीप कुमार, डाटा एन्ट्री आपरेटर	संस्मरण	53
29.	डिसीज़न मेकिंग – हर्बर्ट साइमन के सिद्धांत	डॉ संदीप कुमार बाजपेई, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	58
30.	सर्वश्रेष्ठता की होड़	श्री सुखदेव गोयल, क.हिन्दी अनुवादक	लेख	61
31.	मिली हुई कविता (फाउंड पोएट्री)	श्री सुव्रत रॉय, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	लेख	63
32.	फ़ोटो प्रेम	श्री हिमांशु धर्मदर्शी, प्रधान महालेखाकार	लेख	65

इस अंक में सम्मिलित रचनाओं में व्यक्त विचारों का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष उत्तरदायित्व स्वयं रचनाकारों का है। रचनाकारों के विचारों से संपादक मण्डल या कार्यालय का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

समन्वय एवं मुद्रण

1. श्री पवन सिंगला, हिन्दी अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार, (लेखापरीक्षा-II) गुजरात, अहमदाबाद
2. श्री अभिषेक कुमार, हिन्दी अधिकारी, कार्यालय प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), अहमदाबाद
3. श्री अजय कुमार शुक्ल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
4. श्री शिवानंद, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
5. श्रीमती कुसुम लता, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
6. श्री चिंटू एम. गुप्ता, लेखापरीक्षक

परिंदों की परवाज़

अनिल कुमार बेनीवाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

'आदित्य' उदय हो रहा क्षितिज से;
हो रहा एक नई 'सहर' का आगाज़ ।
परिंदे फिर से चहचहा उठे;
मचल रहे लेने को- फिर से एक नई परवाज़ ।।

'चिड़िया' चुग रही है दाना और'कपोत' कर रहे कलोल;
'मयूर' भी हैं नाच रहे, निहार रहे बदरी बन आये 'देवराज' ।
क्या गज़ब है इनकी दुनिया?ना कोई बेड़ी,ना कोई ताज;
मेरा मन भी सोच रहा, हो इनकी परवाज़ों में- एक मेरी भी परवाज़ ॥

है समेटे हुए अपने रंग में 'शुक', 'धरा' का हरा रुआब;
हूँ अचरज में देख-देख के, ऊँचाई जो नाप रहा है 'बाज़' ।
इठला रही प्रकृति अपनी रचना पे, और कर रही है इन्हें सलाम;
लो अब आई 'गोधूलि' बेला, रवि ने धारण किया लालिमा अंदाज़ ॥

पंछी भी हैं अब लौट चले अपने- अपने घरौंदों को;
मन में लिए उमंग और मिलाये साज़ में साज़ ।
कर रहे हैं शुक्र ख़ुदा का, है उनमें ये अडिग विश्वास;
ये अंजाम ही तो है- एक नई परवाज़ का आगाज़ ॥
ये अंजाम ही तो है- एक नई परवाज़ का आगाज़ ॥

जम्हाइयों से ये पल

अभिषेक कुमार
हिंदी अधिकारी

शूल सी स्थायी सुइयों से निकल
जम्हाइयों से ये पल
बीतते रह-रह कर
भीगते बहते कलकल

किस बात की हलचल
न कोई अमर, न जीवन मलमल
किस बात का डर
छोड़ मोक्ष कामना,सिर्फ़ चल

कहाँ बसता बचपन
मुरझाते यौवन, जीवन दौड़ता सरपट
चहुं ओर मरुस्थल, मृग-तृष्णा
थकते राहगीर, आश्रय सुख पलभर।

दीपावली के अवसर पर बहुकार्य कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रीतिभोज

मैं, मोटापा और मन:स्थिति

अभिषेक पंवार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

एक ऐसा संयुक्त परिवार, जिसमें प्यार करने वाले माँ-बाप, दादा-दादी, चाचा-चाची साथ हों, किसी भी बच्चे का वज़न बढ़ने के लिए अनुकूल परिस्थिति होती है । इस पर सोने पे सुहागा ये कि वो बच्चा घर में सबसे छोटा हो। इतना प्यार पाने वाला बच्चा जब ऐसे परिवार में रहता हो, जहाँ प्यार जताने का तरीका ठूंस-ठूंस के खाना खिलाना हो, तो उस बच्चे को मोटा होने से कोई रोक नहीं सकता। जी हाँ, आप ठीक समझे, वो बच्चा मैं हूँ और जब से होश संभाला है, अपने आप को मोटा ही पाया है ।

कितनी परेशानियाँ उठाईं मैंने मोटा होकर, दिल और फेफड़ों ने बहुत ओवर-टाइम किया । कभी आराम से अपनी जुराबें तक नहीं पहन सका मैं। ज़मीन पर बैठना मेरे लिए सज़ा थी । तेज़ भागना और सीढ़ियाँ चढ़ना दुनिया के सबसे मुश्किल कामों में से थे। स्कूल में, पार्क में दूसरे बच्चे चिढ़ाते, वो इन्सेंटिव अलग से। ऐसे में दोस्त भी अपने जैसे ही बन गए। सब मोटे-मोटे, एक ही कुटुंब के लगते थे। एक दूसरे से दुःख बाँट लेते और क्योंकि बचपन तो बचपन होता है, सब भूल कर आगे बढ़ जाते।

फिर किशोरावस्था आई, कुछ हार्मोंस ने अपना काम बढ़ा दिया । दिल अब ओवर-टाइम करते करते इधर-उधर भी भटकने लगा था, पर इस बार स्थूल शरीर ने पूरा साथ दिया, एक विशेष प्रकार के प्रलोभन को तो पास फटकने तक नहीं दिया। कक्षा में अच्छा प्रदर्शन भी स्थूल शरीर को पछाड़ नहीं पाया, इस विशेष प्रलोभन के मामले में । पर कोई नहीं, सब चलता रहा । मोटापे के कारण घर से बाहर जाने में भी शर्म सी महसूस होने लगी थी, इसलिए कम ही बाहर जाता ।

जो बात मैं और मेरे परिवार वाले शुरू से ही नहीं समझे वो यह थी कि मोटापा चढ़ना जितना आसान है, उसको उतारना उतना ही मुश्किल। बुरा तब लगना शुरू हुआ जब मैं घर में सबसे छोटा नहीं रह गया और वो ही लोग जो पहले मुझे खाना

खिलाकर प्यार जताते थे, अब मुझे ताने मारने लगे ... कितना मोटा हो गया है .... खा-खाके क्या हाल बना लिया है ..... घर से बाहर निकल, कुछ हाथ पैर हिला। क्या दिन बदले मेरे, पहले जिन मोटे-मोटे गालों को सब खींचते और खुश होते, अब वे ही थुल-थुल कहलाने लगे थे।

बारहवीं की परीक्षा के बाद छुट्टियों में, भारी जीवन को बदलने की ठान ली। अब मैं सुबह जल्दी उठकर चलने जाता, धीरे-धीरे थोड़ा भागना शुरू किया, खाने में बदलाव किया। एक महीने में बदलाव नज़र आने लगा। इससे पहले कि जीवन हल्का होता, इंजीनियरिंग में दाख़िले की तैयारी के लिए घर से बाहर जाना पड़ा, सारा सपोर्ट मैकेनिज़्म ही ख़त्म हो गया। उसके बाद तो डाइटिंग-वाईटिंग सब धरी रह गयी। मोटापा अपने चरम पर पहुँच गया। अब तक हम चिकने घड़े बन चुके थे, कोई कुछ कहे, कोई परवाह नहीं। कभी-कभी घर जाना होता, इसलिए घर वाले फिर अपने चिर-परिचित अंदाज़ में प्यार जताने लगे। मैं भी बोलता, आ जाने दो ..आलूपराठा, समोसा, पनीर, ये....वो..... ।

फिर इंजीनियरिंग कॉलेज में दाख़िला लिया तो सारे सीनियर एक ही सवाल पूछते थे, कौन सी चक्की का आटा खाते हो बे? जवाब ही नहीं था कुछ मेरे पास। कॉलेज के बाद नौकरी तो लगी नहीं पर घर वालों ने कहा- नौकरी वौकरी लगती रहेगी पहले शादी कर लो। मैंने भी समाज में अपना स्थान जानने के लिए हाँ कह दिया। फिर तो जो तोपें चली, जो बम फूटे, पूछो ही मत। बेटा क्या करते हो??जी अभी कुछ नहीं करता, पर हाँ जल्द ही कुछ कर लूँगा। बेटा एक बात कहनी थी कि जब कुछ करते नहीं हो तो थोड़ा घूम फिर ही लिया करो, इतना मोटापा अच्छा नहीं। मैं खीझकर दांत दिखा देता। मन ही मन कहता.... पहली फुर्सत में निकल।

फिर भगवान की दया से नौकरी लग गई, शादी भी हो गयी, एक अच्छी जीवनसंगिनी मिल गई, दो सुन्दर बेटियां भी हो गईं। पर बच्चों में भी तो मेरे ही जींस थे, भले ही पढाई में नहीं पर शरीर में दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करने लगे। हर अभिभावक-अध्यापक मीटिंग में शिक्षक कहता- बाकी सब तो ठीक है पर इसका वज़न थोड़ा ज़्यादा है, आप इसका कुछ कीजिये, और एक मिनट, अपना भी कुछ कीजिये, जब आप ही मोटे होंगे तो बच्चे को क्या समझाएँगे। बहुत ग्लानि हुई। ठान लिया अब तो कुछ करके रहूँगा, अपने नहीं तो बच्चों के लिए। व्यायाम शुरू कर

दिया, प्रोटीन, फाइबर व कॉम्प्लेक्स कॉर्बोहाईड्रेट्स का सेवन करने लगा। सोचा पहले खुद पर आज़माऊंगा, पतला होऊंगा और फिर बच्चों के सामने उदाहारण पेश करूँगा पर भगवान साक्षी हैं कि मेरे प्रयत्नों को धता बताते हुए, रात होते-होते फैट और सिम्पल कॉर्बोहाईड्रेट्स बाज़ी मार लेते हैं। मैं शीशे के सामने ठगा सा खड़ा खुद को देखता हूँ और ये सोचता रहता हूँ कि जो मैंने अपने जीवन में भुगता, वो अगली पीढ़ी को भुगतने से कैसे बचाऊँ?

महिला दिवस – 2022 के अवसर पर कार्यालय की महिला सदस्य

आज़ादी के 75 वर्ष और हम

अमन दीप
बहु कार्य कर्मचारी

है भारतवर्ष का यह उत्सव
आज़ादी का अमृत महोत्सव
हर भारतवासी का गौरव
सबसे युवा भारत का उद्भव।

गफ़लत में न हों कि सहज ही
भारत ने मुकाम ये पाया है
कई लाखों वीर सपूतों को
माँओं ने चिता पे सुलाया है।

हर शहादत पे समझा गया
एक और सूरज ढल गया
और आज़ादी की शमां में
एक और परवाना जल गया।

ग़र आज़ादी मांगे ये रक्त
हम अपना लहू पिलायेंगे
ना लौ ये बुझने देंगे कभी
खुद जल के भी इसको जलाएंगे।

हम आज़ादी का मान करें
इस स्वतंत्रता पर शान करें
किसी और को न कर दें कुंठित
इस बात का भी हम ध्यान करें।

कर ली हमने प्रगति काफ़ी
नहीं इसमें तनिक भी है शंका
अग्नि और तेजस
भारत का बजा रहे डंका।

देकर चंद्रयान को हौसले के पंख
हमने चाँद तक दूरी मापी है
पर उन्नति की इस यात्रा में
अभी और मंज़िलें बाक़ी हैं।

कुछ हो अनुचित तब रोष करो
विरोध का तुम जयघोष करो
अखंड भारत है 'हम सबका'
किसी के भी प्रति न तुम द्वेष करो।

विकास का क्रम जो शुरू हुआ
उसे मंज़िल तक पहुँचाना है
करके हमें देशहित
मातृभूमि का कर्ज़ चुकाना है।

आओ हम मिलकर प्रण ये करें
भारत को शीर्ष पर लाएंगे
गाँधी, सुभाष सम वीरों के
सपनों का भारत बनाएंगे।

जय हिंद॥

मेरा स्थानांतरण वृत्तान्त : पटना से अहमदाबाद तक

अमित कुमार
व. लेखा परीक्षा अधिकारी

मैं पिछले 17 वर्षों से पटना, महालेखाकार (लेखा परीक्षा) कार्यालय में कार्यरत था। मैं वहाँ वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी(वा.) के पद पर मुख्यालय में कार्य कर रहा था। मेरा स्थानांतरण फरवरी माह में होने की आशा थी, मगर आदेश अगस्त 2021 में हुआ। मेरा स्थानांतरण आदेश 12 अगस्त 2021 को ज़ारी हुआ जिसके अनुसार मेरी तैनाती सिक्किम, गंगटोक कार्यालय में हुई, मगर वहाँ की जलवायु और भौगोलिक स्थिति मेरे स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं थी, इसलिए मैंने मुख्यालय कार्यालय में अपने स्थानांतरण के स्टेशन को बदलने का आवेदन दिया। तत्पश्चात्, मेरा स्थानांतरण कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा-II) गुजरात, अहमदाबाद में हुआ।

मैं बहुत डरा हुआ था क्योंकि 17 वर्षों में पहली बार मेरा स्थानांतरण हुआ था। मैं बिहार का मूल निवासी हूँ तथा पटना में मैंने बहुत समय तक अध्ययन किया था और नौकरी लगने पर मेरी पहली तैनाती भी पटना में हुई। मेरा सरकारी सेवा का अभी तक का समय पटना कार्यालय में ही कटा जहां मुझे हमेशा अपनापन मिलता रहा। अब मुझे यह डर सताने लगा कि गुजरात कार्यालय कैसा होगा, वहाँ कैसे लोग होंगे? अहमदाबाद कार्यालय में मेरा कभी भी जाना नहीं हुआ था और न ही कोई जान-पहचान थी।

मुझे पटना कार्यालय से 13 अक्टूबर 2021 को कार्यमुक्त किया गया। मैं दशहरे के कारण चार दिनों का जॉइनिंग टाइम लेकर 18 अक्तूबर 2021 को कार्यभार ग्रहण करने के लिए गुजरात कार्यालय पहुंचा । मुझे वहाँ तक मुंबई में कार्यरत मेरे पटना के एक मित्र श्री राजेश रॉय ने पहुंचाया। मैंने रिसेप्शन पर बताया कि मुझे लेखा परीक्षा-II कार्यालय में कार्यभार ग्रहण करना है। रिसेप्शन पर बैठे व्यक्ति मुझसे बात ही कर रहे थे कि तभी एक सज्जन आए। उनको रिसेप्शन पर बैठे व्यक्ति ने बताया कि ये पटना कार्यालय से कार्यभार ग्रहण करने के लिए आए हैं। तब उन

सज्जन ने मुझसे कहा, "आप मेरे साथ आओ"। मैं उनके साथ प्रथम तल तक गया और फिर उन्होंने मुझ से प्रशासन अनुभाग की ओर इशारा कर के कहा कि वहाँ जाकर आप कार्यभार ग्रहण कर लो। मैं प्रशासन अनुभाग में गया और अपना कार्यभार ग्रहण किया। तत्पश्चात् कार्यालय के कुछ साथियों से मेरी मुलाक़ात हुई। वे सब मुझसे अपरिचित थे फिर भी उन्होंने मेरा जो आदर-सत्कार किया, वो मुझे सदा याद रहेगा।

इन सब से निपट कर मैं जब फिर रिसेप्शन पर पहुंचा तो वहाँ बैठे व्यक्ति ने पूछा- "क्या आपने कार्यभार ग्रहण कर लिया"? मैंने कहा- हाँ। उन्होंने फिर पूछा, "क्या आपने उन्हें पहचाना जिनके साथ आप ऊपर गए थे"? मैंने कहा, मैं तो आज ही यहाँ आया हूँ, मुझे नहीं पता। उसके बाद उन्होंने जो कहा, वो बहुत आश्चर्यजनक था। उन्होंने बताया कि वह लेखा परीक्षा-II कार्यालय के प्रधान महालेखाकार महोदय थे जिन्होंने ख़ुद इस कार्यालय में मेरे पहले दिन मेरा मार्गदर्शन किया। यह मेरे लिए काफी चौंकाने वाला था क्योंकि मैं जिस कार्यालय से आया था, वहाँ ऐसी सादगी/शालीनता मैंने कभी नहीं देखी थी। ऐसा बस गुजरात में देखने को मिला।

धीरे-धीरे इस कार्यालय में मेरा समय बीतने लगा। मैं शुरू में अपना ज़्यादा समय पुस्तकालय में बिताता था। वहाँ मैंने पुस्तकों का जो संग्रह देखा, वो अद्‌भुत था। ऐसा लगा मानो काफी सोच-विचार कर यहाँ पुस्तकें रखी गई हैं। मेरा भी मन साहित्यिक हो गया और मैंने प्रेमचंद का गोदान तथा अन्य साहित्य पढ़ डाला । बीच में मन नहीं लगने के कारण घर चला आया तथा लंबी छुट्टी के बाद फिर गुजरात पहुंचा। वहाँ फिर से मुझे सभी का सहयोग मिला और मैं कार्यालय के कार्यों में व्यस्त हो गया। अंततः मुझे लेखा परीक्षा का कार्य मिला और मैं निरीक्षण में चला गया।

भैया जी का हुआ अवतार

कश्यप व्यास
पर्यवेक्षक

भैया जी का हुआ अवतार

इन्द्र, सभासद हुए लाचार

सूर्य, वरुण, अग्नि हुए बीमार

सर्वस्व छोड़ भागने को हुए तैयार

समर्थन में जुटे जन मनाएँ त्यौहार

खुशियों की चली बयार

बजे गीत,ग़ज़ल , हो झंकार

भैया जी की ललकार

मानो जंगल में शेर की दहाड़

बीत गए वसंत, सावन पर न आई बहार

कल तक अपना परिचय बता रहे थे वो मामूली इंसान

पर आज मिलता नहीं उनका जन में कोई निशान।

ज़िंदगी के दो हिस्से : कभी तेरे कभी मेरे

कुसुमलता
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

ज़िन्दगी क्या है?
सोच लें तो सर्दियों की धुंध सी,
जी लें तो उजली दोपहर सी,
चुप रहें तो इंतज़ार की साँझ सी,
बतियालें तो एक नयी भोर सी।

ज़िन्दगी क्या है?
रुक जाये तो जड़ चट्टान सी,
चल पड़े तो सरस बहती धारा सी,
छुप जाए तो अमावस की रात सी,
मिल जाए तो पूनम के चाँद सी।

ज़िन्दगी क्या है?
वही कभी धूप, कभी छाँव वाली,
वही कभी ख़ुशी, कभी ग़म से भरी,
वही कभी मिलती, कभी बिछड़ती हुई।
इन्हीं दो हिस्सों में यह तुम्हें मिली,
इन्हीं दो हिस्सों में यह मुझे मिली।
चलो तो सब मिलकर बाँट लें,
इन्हीं दो हिस्सों को ख़ुशी ख़ुशी,
कभी ज़िन्दगी ये तुम्हें मिल जाए,
और कभी ये मुझे मिल जाए।

वीर बाल दिवस

घनश्याम बिहारी शर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरा अध्ययन सरकारी विद्यालय में संपन्न हुआ। मुझे अभी भी याद है सरकारी विद्यालय में सभी राष्ट्रीय पर्व, महापुरुषों/क्रांतिकारियों की जयंतियों को एक उत्सव की भांति मनाया जाता था। इन्हीं में से एक था बाल दिवस, प्रति वर्ष भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरु जी के जन्मदिवस पर १४ नवम्बर को यह मनाया जाता था। लेकिन यह क्या? कुछ दिनों पूर्व अचानक सरकार ने घोषणा की कि इस वर्ष से प्रति वर्ष 26 दिसंबर को वीर बाल दिवस मनाया जाएगा। वीर बाल दिवस का नाम सुना तो जिज्ञासा जाग उठी कि बाल दिवस सुना था, फिर यह वीर बाल दिवस क्या है और क्यों?

इतिहास के अनुसार यह बात है वर्ष 1704 की, मुग़ल शासक औरंगज़ेब के आदेश पर सरहिंद के तत्कालीन सूबेदार वज़ीर खां के नेतृत्व में मुगल सेना ने 20 दिसंबर को कड़कड़ाती ठंड में अचानक आनंदपुर साहिब किले पर धावा बोल दिया।

समय और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए गुरु गोबिंद सिंह जी से उनके सभी सेनानायकों ने किला छोड़ने के लिए आग्रह किया। जत्थे की बात मानकर गुरु गोबिंद सिंह जी पूरे परिवार के साथ आनंदपुर किला छोड़कर चल पड़े। कहा जाता है कि सरसा नदी में पानी का बहाव बहुत तेज़ था। इस कारण नदी पार करते समय गुरु गोबिंद सिंह जी का परिवार बिछड़ गया। गुरु गोबिंद सिंह जी अपने दो बड़े बेटों अजित सिंह और जुझार सिंह के साथ चमकौर पहुंच गए। वहीं उनकी माता गुजरी एवं दो छोटे बेटे जोरावर सिंह और फतेह सिंह, गुरु गोबिंद सिंह जी के एक सेवक के घर पर रह गए। सूचना प्राप्त होने पर इन तीनों को वहीं से गिरफ़्तार कर नवाब वज़ीर खान के सामने पेश किया गया।

वज़ीर ने जोरावर सिंह और फतेह सिंह से इस्लाम स्वीकारने को कहा। दोनों ने धर्म परिवर्तन करने से मना कर दिया तो नवाब ने 26 दिसंबर, 1704 को दोनों को ज़िंदा दीवार में चुनवा दिया। उस समय उन दोनों की आयु मात्र पाँच वर्ष एवं सात वर्ष थी। इतनी कम उम्र में एवं राष्ट्र एवं धर्म की रक्षा के लिए दिया गया यह बलिदान अतुलनीय है|

यह घटना २६ दिसंबर को घटित हुई थी इसीलिए यह गौरवशाली दिन वीर बाल दिवस के लिए चुना गया है। यह दिवस राष्ट्र रक्षा हेतु युवा पीढ़ी के लिए अत्यंत प्रेरणादायी होगा।

महिला दिवस – 2022 के अवसर पर कार्यालय के सदस्यगण

किसी के लिए कोई रुकता नहीं

चिंटू गुप्ता
लेखा परीक्षक

किसी के लिए कोई रुकता नही
समय कब रुकता है, किसी व्यक्ति के लिए।

हम हैं उलझे हुए उनमें क्यूँ बेवजह
जो ज़रूरी नहीं ज़िंदगी के लिए।

सर झुका देते हैं सम्मान में अपना
और क्या चाहिए बंदगी के लिए।

एक सुकूं से भरी ज़िंदगी है बहुत
हमें और कुछ नहीं चाहिए ख़ुशी के लिए।

क्या बताएँ कि हम कितने मसरूफ़ हैं
समय मिलता नहीं सुख-दुःख को समझने के लिए।

हर व्यक्ति अपने में एक अनमोल
बस समझने की जरूरत हमें।

किसी के लिए कोई रुकता नहीं
क्या लिखूँ उन लोगों की बेरुखी के लिए।

मितव्ययिता की आवश्यकता

जितेन्द्र कुमार खत्री
डाटा एंट्री ऑपरेटर

मितव्ययिता का शाब्दिक अर्थ कम खर्च करने से है तथा हममें से अधिकांश लोग इसे इसी संकुचित अर्थ में ले पाते हैं, परन्तु मितव्ययिता बहुत विस्तृत अर्थ को जाहिर करता है। धन एवं शब्दों के कम उपयोग के साथ संतोष एवं धैर्य को अपनाना भी मितव्ययिता है।

वर्तमान में जिस गति से महंगाई बढ़ रही है उस गति से लोगों की आय नहीं बढ़ पा रही। तो इस स्थिति में महंगाई से जन मानस कैसे पार पा सकता है ? मुझे तो इसका समुचित एवं व्यावहारिक उपाय मितव्ययिता ही लगता है। सर्वप्रथम हमें अपनी मूल आवश्यकताओं को समझना होगा तथा उसके अनुसार धन का व्यय करना होगा, याद रखिये जिस प्रकार अत्यधिक एवं अनावश्यक बोलने वाला व्यक्ति अधिकतर अवस्थाओं में कष्ट पाता है, उसी प्रकार धन का अनावश्यक व्यय करने पर भविष्य में परिस्थितियाँ अनुकूल न होने पर कष्ट ही हासिल होता है।

काफ़ी लोगों में यह भ्रान्ति है कि मितव्ययिता मतलब कंजूसी होता है लेकिन मैं उन लोगों को बताना चाहूँगा कि इन दोनों में एक रेखा का फ़र्क़ है। यदि हम अपनी आवश्यकताओं के अनुसार समुचित व्यय करते हैं तो यह मितव्ययिता है, परन्तु यदि हम धन संचय के लिए अपनी आवश्यकताओं को भी पूर्ण नहीं करते हैं तो यह कंजूसी की श्रेणी में आता है।

यह आवश्यक नहीं है कि जिसके पास धन की कमी है उसे ही मितव्ययिता का पालन करना चाहिए, अपितु धनी व्यक्ति जिनके पास संसाधनों की कोई कमी नहीं है, उन्हें भी इसका पालन करना चाहिए, क्योंकि अनावश्यक व्यय करने की अपेक्षा उन्हीं संसाधनों से वे निर्धन व्यक्तिओं की सहायता करें तो संतोष की प्राप्ति कर सकते हैं।

जनसंख्या विस्फोट से सभी अवगत हैं, जनसंख्या बढ़ने के साथ प्राकृतिक एवं भौतिक संसाधनों का दोहन भी दोगुनी गति से बढ़ रहा है, तो क्या हमारी आने वाली पीढ़ी इन संसाधनों का उपयोग कर पाएगी? इसका उत्तर हाँ हो सकता है, अगर हम अपने उत्तरदायित्व को समझें तथा संसाधनों का उपयोग मितव्ययिता से करें। इनकी बचत ही इनका उत्पादन है।

सभी मनुष्य यदि मितव्ययिता का पालन करें तो दिखावे एवं आडम्बर से दूर हो जाएंगे, लोग पाश्चात्य संस्कृति के पीछे भागना छोड़ देंगे तथा भारतीय संस्कृति को अपनाने के साथ उसका महत्व समझेंगे। क्योंकि मितव्ययिता हमें संयम और संतोष की शिक्षा देती है और स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर बनाती है।

दीपावली के अवसर पर कार्यालय के सदस्यों द्वारा बनाई गई रंगोली

नटखट विद्यार्थी

तारक कुमार दास
लेखा परीक्षक

नटखट विद्यार्थी करें शरारत, न हों कभी गंभीर
न उन्हें द्वेष किसी से, न किसी से उन्हें चिढ़

सरपट भागें दौड़ें, जियें जीवन भरपूर
न सोचें दुनियाँ की बातें, न रहें घमंड में चूर

रहते नहीं मेज़ स्कूल के, उनकी कलाकारी से दूर
मचाएँ ऊधम बहुत, करें धमा-चौकड़ी भरपूर

होता कभी ऐसा कि नहीं होता आपस में मेल
पर भूलें वो पुरानी बातें, खेलते बहुत से खेल

कभी शर्ट बाहर कर, कभी बटन तोड़
होते ख़ुश सभी लगाएँ फ़ैशन की होड़

जब हो खेलने की बात
तब कहाँ सामने हो किताब

हरफ़नमौला हैं ये जनाब,
बनाते नई बात, हैं बनते हाज़िरजवाब।

आसमान बाकी है

दीपेश गुप्ता
वरिष्ठ लेखा परीक्षक

जो जला नहीं, वो उजाला न दे सका
जो चला नहीं, वो सहारा न दे सका
आंसुओं से सबका अपना-अपना वास्ता
मंजिल जुदा-जुदा, जुदा है रास्ता |

हर किसी को यहाँ इम्तिहान देने हैं,
अपने ज़िंदा रहने के प्रमाण देने हैं
पथ पे जो बाधा, उसे गिरना भी पड़ा,
बिना गिरे यहाँ कौन हो सका खड़ा|

जो उठा नहीं, वो यहाँ चल न पायेगा
जो चला नहीं, वो कुछ न कर पायेगा,
मरने के लिए यहाँ जीना भी पड़ता है
खुशी के लिए तो ग़म पीना पड़ता है |

रोते-रोते कट गई, वो क्या ज़िन्दगी
ढोते-ढोते कट गई, वो क्या ज़िंदगी|

मुश्किलों में जो चलना छोड़ देते हैं,
अंधेरों में जो जलना छोड़ देते हैं
उनको ये दुनिया कभी जान न सकी,
चाहते हुए भी पहचान न सकी |

रोशनी के क़ाफ़िले जो दूर हैं तो क्या ?
और थोड़े हम मजबूर हैं तो क्या ?
ग़म से खुशी का पता पूछ लेंगे हम,
मंज़िलें हों दूर तो भी ढूंढ लेंगे हम |

'पर' खोल के तू अपने देख तो ज़रा,
तेरा आसमान है, तेरी है धरा
खोल पंखों को, उड़ान बाकी है,
तेरे लिए अभी, आसमान बाकी है |

कब तलक ये कब तलक

प्रवीण कुमार झा
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

कब तलक ये कब तलक,
जब कभी भी बनती है कहीं, कोई भी, ऐसी दहेज हत्या की ख़बर,
काँप जाती है रूह हर बेटी की, फट जाता है कलेजा, माँ का,
हर एक बच्ची के पिता का,
आएंगी ऐसी खबरें, कब तलक।

कब तक थमेगा ये सिलसिला, हत्या बेटियों की कब रुकेगी,
कब तक लटकाई जाएगी वो, फूल सी बच्ची एक "कल्याणी",
अपने पापा की कोई लाडली,
कब तलक, ये कब तलक।

एक पिता सब लुटाकर देता है, अपनी लाडली को एक घर,
रक्षक बने उसका ऐसा एक वर, क्या ख़बर होती उसे, ये होगा,
रक्षक ही उसका भक्षक बनेगा,
क्यों आखिर, कब तलक।

मन में ग्रहण आशंकाओं का, लाडो के भविष्य पर ख़तरों का,
क्या करे, हर पिता ये सोचता, कैसे सुरक्षित रह सकेगी बेटियाँ,
सब लुटाकर भी, जब ना हुआ,
देखा सब करके, अब तलक।

यूँ ही नहीं, बेटियाँ जन्म से ही, सबको भार लगती हैं, डराती हैं,
समाज में फैले हुए, दरिंदों का, हो ना कोई लाडली शिकार,
यही डर, हर पिता को डराता है,
होता ही रहा है ये, अब तलक।

इस संकट का है यही एक उपाय, शिक्षा पूरी मिले, अब बेटियों को,
देकर कवच, आत्मनिर्भरता का, बना दें इतना सशक्त हम उनको,
करें वो ख़ुद, सामना हर भय का,
होता रहे यही अब, मुद्दत तलक।

कहने जितना आसान तो नहीं ये, इस काम की डगर है बड़ी कठिन,
हिम्मत देनी होगी, हर माँ बाप को, जगाना होगा सोए हुए समाज को,
रास्ता दो कि बेटियाँ आगे बढ़ेंगी,
रोक रखा था हमीं ने, अब तलक।

होंगी सशक्त जब हमारी बेटियाँ, हर बुराई से लड़ेंगी खुद ही वो,
देनी होगी उन्हें अब ऐसी परवरिश, उनके डर से दरिंदों की रूह कांपे,
अब तो हमें ये करना ही होगा,
ज़िन्दगी के, आख़िरी दम तलक।

दीपावली के अवसर पर कार्यालय के सदस्यों द्वारा बनाई गई रंगोली

एक एहसास जो पहले कभी न हुआ

प्रशांत कुमार
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

शुक्रवार की शाम के लगभग 6 बज चुके थे, दफ्तर खाली होने लगा था। 'सर आपका हो गया.. मैनी मैनी काँग्रेचुलेशन्स' – ऐसा बोलकर राहुल प्रिंट निकालने लगता है और मेरी तरफ आता है, ऐसा लगा जैसे मुझे अपने कानों पर विश्वास न हो रहा हो । 'मैं कुछ समझा नहीं' ऐसा बोलकर दोबारा बताने को कहा|उसने फिर थोड़े तेज़ स्वर में कहा- सर.. आपका वॉशिंगटन जाना कन्फ़र्म हो गया है। दूतावास लेखापरीक्षा हेतु आपका चयन हो गया है।फिर क्या था- मन में अजब सी हलचल होने लगी । कुछ दिख नहीं रहा था, कान बंद से हो गए थे।

एक-दो मिनट के बाद जब मैं संभला तब तक राहुल मेरे हाथ में प्रिंट निकाल कर दे चुका था। उसकी फोटो लेकर मैंने अपने घर भेजा और आदेश की प्रति लेकर सचिव महोदय को दिखाया। एक अच्छे मित्र की भांति वे हर्षित हुए और हाथ मिलाकर कहा-जल्दी जा.साहब को भी बता दे- मैं केबिन की तरफ दौड़ा, मेरे पाँव जमीन पर नहीं थे, हवा में तैरता हुआ प्रधान निदेशक महोदय के कमरे में पहुँचा। अंदर निदेशक महोदय पहले से ही बैठे थे। हाथ में ऑर्डर की प्रति लहराते हुए कहा 'सर.वॉशिंगटन प्रतिनियुक्ति हेतु चयन हो गया। वैसे तो प्रधान निदेशक महोदय काम काज में काफी सख़्त हैं पर मेरी बातों को सुनकर आह्लादित हो गए और कहा- ये तो पूरे ऑफिस के लिये गर्व की बात है और फिर निदेशक महोदय से मेरे बारे में कुछ अच्छा कहने लगे पर मैं अभी भी पूरी तरह से स्थिर नहीं हुआ था। मुझे उनकी बातों का पता नहीं लग पा रहा था|

मैं अपने आप को असहज महसूस करने लगा| मैं ओके सर, थैंक्स सर कह बाहर निकल गया। सेक्शन में आकर कंप्यूटर शट-डाउन किया, लाइट बंद की और बैग उठाकर नीचे पार्किंग में आया और गाड़ी में बैठा, गाड़ी अंदर से बंद

की और फूट-फूट कर रोना शुरू कर दिया, शायद वो असहजता उसी कारण थी।

मुझे अपना जीवन वृतांत सिनेमा की तरह सामने दिख रहा था। बिहार जैसे प्रांत से आने वाला एक लड़का जिसने अपने पिता को किशोरावस्था में ही खो दिया था,अब तक के अपने जीवन का एक हिस्सा साइकिल पर गुजारा था, नौकरी से पहले जिसने अपनी पढ़ाई लिखाई केरोसिन तेल वाले लालटेन में की हो, वो वॉशिंगटन जा रहा था, ये सब कल्पना के बाहर ही था।

थोड़ी देर जब जी भर कर रो लिया और अपने आप को सहज पाया तब गाड़ी स्टार्ट की और घर की तरफ निकला। अब ऑफ़िस के बाहर आ चुका था। सब कुछ सामान्य सा लगने लगा, हर दिन की तरह माँ से बात करने के लिये फ़ोन उठाया पर आज कुछ अलग था। मोबाइल पर कई मिस्ड कॉल्स थे, सबको दरकिनार करके सोचा सबसे पहले माँ से बात करूँगा, खूब ख़ुश होगी, पापा के जाने के बाद उसे खुश देखना शायद मेरा एक मात्र उद्देश्य रहा है। पर माँ तो माँ होती है –उसे जैसे ही बताया कि माँ मुझे ऑफिस की तरफ से वॉशिंगटन जाना है वो चुप सी हो गयी, जैसे मैंने कोई गलत बात कर दी हो और कहा विदेशों में तो कोरोना है।

फिर मैंने कहा कि वहां अगले साल जाना है, तब तक सब ठीक हो जाएगा तो फिर उसकी अगली चिंता थी कि बाहर खाने की बहुत दिक्कत होती है, फिर मैंने कहा कि मां तेरी बहू भी साथ जाएगी तो खाने की दिक्कत नहीं होगी और मां मैं हर साल आऊंगा जैसे अभी आता हूं। मेरे इतने सारे तर्क सुनने के बाद मां को लगा कि बेटा कुछ ज़्यादा खुश है तो उसने भी अपनी खुशी ज़ाहिर कर दी और कहा तेरी ख़ुशी में मेरी ख़ुशी है (माँ शायद ऐसी ही होती है)। फिर मैंने फ़ोन रख दिया| अब तक मैं घर पहुंच चुका था, पत्नी जी को तो शुरू में ही मैसेज कर दिया था| उनकी मुस्कान और अश्रु भरे नयन यह बता रहे थे कि वह कितनी खुश हैं। हैंडबैग उनके हाथों में देकर आसपास के मित्रों के घर मिलने निकल गया|वह भी पीछे से मेरा साथ देने आईं। अब मैं फ़ोन उठाने लगा

था और बधाई भी स्वीकार करने लगा था| इसी दौरान एक कॉल आई जिसमें सिर्फ नंबर ही थे, मुझे इस बात का ज़रा सा भी एहसास नहीं था कि वह फोन किसका है? वह फोन धर्मदर्शी साहेब का था। उनके आशीर्वचनों ने ह्रदय की गति को पल भर के लिए रोक दिया| उनका प्यार इतना स्वच्छ झलक रहा था मानो गंगा| ऐसा लगा जैसे आज सब कुछ पा लिया| फिर उसके बाद कई फ़ोन आते गए मैं उठाता गया.. सब की बधाइयां लेता गया।

अगले कार्य दिवस सोमवार को ऑफ़िस पहुंचा|प्रांगण के अंदर दाखिल हो रहा था तो ऐसा लगा यह ऑफ़िस, ऑफ़िस नहीं एक मंदिर है। .कितना कुछ दिया इसने- मान, सम्मान,इज़्ज़त। लगा कि इसकी दीवारों को चूम लूं|आज इसके पत्थरों में एक अज़ब से अपनेपन का एहसास हो रहा था| ऐसा लग रहा था ये ऑफ़िस अब पराया हो जाएगा। ऐसा शायद इसके पहले कभी महसूस न किया हो।

[अब इस बात को कई महीने बीत चुके हैं और मेरे वाशिंगटन जाने में कुछ ही समय शेष है, पर वह एहसास शायद हमेशा-हमेशा मेरे मन मस्तिष्क में रहेगा]

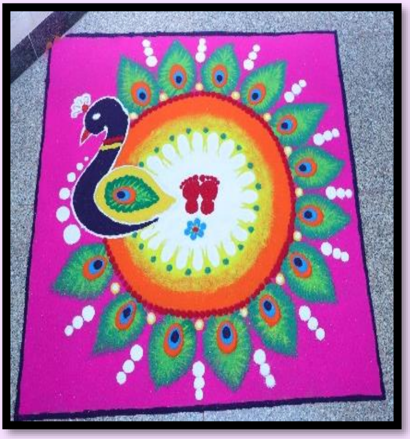

दीपावली के अवसर पर कार्यालय के सदस्यों द्वारा बनाई गई रंगोली

बचपन

बिनय कुमार
लेखा परीक्षक

इस प्रतिस्पर्धा के ज़माने में हम कब बड़े हो गए,
पता ही नहीं चला कब अपने पैरों पे खड़े हो गए।।
जिस मिट्टी में दोस्तों के साथ हम खेला करते थे...
कभी रोते थे तो कभी- झगड़ते थे,
कभी आम तो कभी अमरूद के पेड़ों से फल तोड़ा करते थे।।

वो दिन भी क्या दिन थे...
न फ्यूचर का टेंशन, ना नौकरी के बाद का पेंशन,
हर कोई मस्त था, बचपन भी क्या ज़बरदस्त था।।

कभी- तितलियों के पीछे भागना, कभी दादा-दादी से गुब्बारे के पैसे मांगना,
स्कूल न जाने का बहाना...रिपोर्ट कार्ड पे साईन के लिए पेरेंट्स को मनाना।
बचपन में ऐसी अनेक चटपटी बातें थीं..
दिन सुनहरे और सुकून की रातें थीं।।

गर्मियों की छुट्टी का इंतज़ार रहना...
नाना-नानी के घर जाने को बेक़रार रहना।।
बचपन के वो मिट्टी के खिलौनों की कीमत भले ही सस्ती थी...
पर हमारी जान उसी में बसती थी।।

आजकल के बच्चों में बचपना खोता जा रहा है,
गिल्ली-डडा और पिट्ठू जैसे संगठित खेलों को छोड़कर...
अकेले पब-जी में खोता जा रहा है।।
बचपन एक दौर नहीं, यह तो ज़िंदगी होती है।
इसकी सुनहरी यादें, सारी उम्र हमें खुशियां देती हैं।

टालमटोल (दीर्घसूत्रता _Procrastination)

मनोज कुमार बाघेला
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

षड् दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता ।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता ।।

ऐश्वर्य या उन्नति चाहने वाले मनुष्य को नींद, तन्द्रा (ऊँघना), डर, क्रोध, आलस्य तथा दीर्घसूत्रता (काम करने में विलम्ब करने की आदत) इन छः दुर्गुणों को त्याग देना चाहिए । **(विदुर नीति से)**

मानवीय स्वभाव अनंत है, जिसमें एक स्वभाव है "टालमटोल करना" अर्थात समय रहते कार्य को पूरा नहीं करने की बजाय अंतिम समय तक काम को पूरा न करना एवं बिलकुल ही नगण्य समय बाकी होने पर काम को पूरा करने का प्रयास करना। ऐसा नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति के स्वभाव में टालमटोल करने की आदत होती है परन्तु टालमटोल करने का स्वभाव काफ़ी लोगों में पाया जाता है ।

यह किसी व्यक्ति विशेष के स्वभाव का उल्लेख नहीं है परन्तु यह कहना उचित होगा कि सरकारी कार्यालयों में ऐसे स्वभाव वाले व्यक्ति प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। पूर्व में टेलीविजन पर "ऑफ़िस-ऑफ़िस " नामक एक धारावाहिक का प्रसारण किया जाता था जिसमे सरकारी कार्यालयों में होने वाली लापरवाही, टालमटोल और काम को टालने वाले व्यवहार का व्यंग्यात्मक रूप से चित्रण किया जाता था । इसके अतिरिक्त एक अन्य धारावाहिक "फ्लॉप-शो" में भी इसी प्रकार का व्यवहार दर्शाया जाता था। यह व्यंग्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता था परन्तु था तो सत्य ही। आज भी ये उतना ही वास्तविक है और आज भी इसी प्रकार के व्यवहार वाले कर्मी सभी सरकारी कार्यालयों में मौजूद हैं ।

आज भी कार्यालयों में किसी साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक रिटर्न को प्रेषित करने की अंतिम तिथि से मात्र एक दिन पहले ही यह जागरूकता आती है कि उक्त रिटर्न को प्रेषित करने का समय निकट ही है और प्रेषित करने हेतु शीघ्रता की जाए।

टालना हम सबकी आदतों में शामिल होता है। इस दुनिया में शायद ही कोई होगा जो टालने की आदत से बिल्कुल मुक्त हो। किसी महत्वपूर्ण काम को टालने से क्या नुकसान होता है ये सब जानते हैं इसलिए महत्वपूर्ण काम को तो अधिकतर कोई नहीं टालता, लेकिन यहाँ बात उन छोटे-छोटे लेकिन जरूरी कार्यों की हो रही है जिन्हें आप टाल सकते हैं, भले ही वे लाभदायक हों जैसे कि समय पर बिल भरना, नित्य योग/व्यायाम करना, कुछ नया अध्ययन करना। इसके अतिरिक्त कौन सा काम महत्वपूर्ण है अथवा नहीं है, यह निर्धारित कर उसे पूरा करना अथवा टालमटोल करना।

हममें से अधिकतर लोग अपने कई काम अक्सर कल पर टाल देते हैं। इसके कई कारण हो सकते हैं जैसे कि हम अपने काम से जी चुराते हैं या फिर अपने काम को खत्म करने में कुछ आलस कर जाते हैं। बहुत बार ऐसा भी होता है कि हम अपने जरुरी कामों को समय पर पूर्ण करने के महत्त्व को नहीं समझते और फ़ालतू के अन्य काम जैसे कि वीडियो गेम्स खेलना, एंटरटेनिंग वीडियोज़ देखना, बेवजह कहीं घूमने-फिरने चले जाना या फिर, गपशप मारना आदि करने लगते हैं जिससे हमारा बहुत समय बर्बाद हो जाता है। अक्सर स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थी परीक्षाओं के समय भी अपने स्मार्ट फ़ोन पर अच्छा-खासा समय बर्बाद कर देते हैं।

इसी तरह कारोबारी, पेशेवर या साधारण लोग भी अपने जरुरी और महत्त्वपूर्ण काम कल पर टाल कर फ़ालतू कामों या गपशप में अपना कीमती समय अक्सर बर्बाद कर देते हैं। ऐसा कभी-कभार होना तो एक सामान्य-सी बात है लेकिन जब हम रोज़ाना अपने कई जरुरी काम कल पर टालने लगें तो यह काफी नुकसानदायक आदत साबित होती है। हम लोग किसी भी उम्र में इस खराब आदत के शिकार हो सकते हैं। अपने सभी जरुरी कामों को कल पर टालने से हमें जान-माल का नुकसान तो हो ही सकता है, इस बेकार आदत के कारण हमारे परिवार, दोस्तों और समाज में हमारे सम्मान को भी चोट पहुंचती है। इतना ही नहीं, यह आदत हमारे आत्मसम्मान को भी ठेस पहुंचाती है

यह हम सभी जानते हैं कि टालमटोल करना सर्वथा अनुचित व्यवहार है लेकिन फिर भी हम कहीं न कहीं टालमटोल करते ही हैं । हम में से कई लोगों को

टालमटोल करने की वजह से नुकसान भी उठाना पड़ा होगा लेकिन फिर भी यह स्वभाव अभी भी हमारे साथ ही चल रहा है ।

बहुत कठिन नहीं है कि हम इस टालमटोल की आदत से छुटकारा पा लें और अपने वरिष्ठों, सहकर्मियों, अधीनस्थों एवं परिवारजनों/सम्बन्धियों के मध्य अपना समुचित एवं वास्तविक सम्मान/प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकें। बस हमें दृढ निश्चय और संवेंदंशीलता के साथ आरम्भ करना होगा ।

- **कार्यों की प्राथमिकता निश्चित करें**:-

सर्वप्रथम यह सुनिश्चित करें कि कौन सा काम सबसे अधिक महत्वपूर्ण है जिसे सबसे पहले करना है।

- **दिन के अपने सर्वाधिक उत्पादक समय का पता लगाएं:-**

यह पता लगाएं कि आप दिन के किस समय सबसे अधिक उत्पादक होते हैं और इस समय स्वयं को एकाग्रचित्त रखें।

- **समय सीमा स्थापित करें:-**

अपने कार्यों को पूर्ण करने के लिए लक्ष्य तिथियां बनाएं। लक्ष्य तिथि के निर्धारण के समय कुछ अतिरिक्त समय अवश्य रखें ताकि यदि किन्हीं अपरिहार्य कारणों से अधिक समय की आवश्यकता हो तो भी पर्याप्त समय उपलब्ध हो। तदैव, दृढ़ निश्चय के साथ समय सीमा में ही कार्य पूरा करने का श्रम करें।

- **व्यवधान दूर करें:-**

बिना रुके काम करने के लिए हर दिन कुछ घंटे अलग रखें। इसका मतलब है कि कोई कॉल नहीं, कोई ई-मेल नहीं, फेसबुक, ट्विटर और अन्य सोशल मीडिया पर गतिविधि नहीं और सहकर्मियों के साथ भी कोई वार्तालाप नहीं।

- **पूर्ण किए गए कार्यों की सूची बनायें:-**

प्रत्येक दिन के अंत में यह लिखें कि आपने क्या-क्या कार्य पूरा किया है। यह आपको यह जानने में मदद करेगा कि आप कितनी कुशलता से काम कर रहे हैं और आप कहाँ सुधार कर सकते हैं।

और सबसे महत्वपूर्ण बात, अच्छे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है कि आप पर्याप्त नींद लें और विश्राम करें ।

अंत में सिर्फ इतना ही कहना हैं कि आप लाखों-करोड़ों रुपये खर्च कर भी अपना बीता हुआ समय दुबारा प्राप्त नहीं कर सकते। कभी-कभार आलस करना या अपने किसी काम को कल पर टालना तो ज्यादा गंभीर मुद्दा नहीं है लेकिन आप अपने आलस और नासमझी के कारण अपने ही समय को बर्बाद करने के बुरे परिणामों में बारे में जरुर गंभीरता से सोचें और अपने समय का सदुपयोग करने के लिए अपने रोज़मर्रा के जीवन में सभी छोटे-बड़े कामों को तुरंत निपटाने की कोशिश करना शुरू कर दें। कुछ समय के बाद अपने सभी कामों को समयानुसार करना आपकी आदत बन जायेगी जिससे आपको जीवन के हरेक क्षेत्र में कामयाबी मिलने के साथ ही अपने परिवार, दोस्तों और समाज में मान-सम्मान भी मिलने लगेगा। एक और खास बात, अपने सभी काम निर्धारित समय-सीमा के भीतर पूरे करने की वजह से आपका आत्मविश्वास भी बढ़ जायेगा।

दीपावली के अवसर पर कार्यालय के सदस्यों द्वारा बनाई गई रंगोली

कार्यालय द्वारा मनाए गए "ऑडिट जागरूकता सप्ताह" के अंतर्गत आयोजित किए गए कार्यक्रमों की कुछ झलकियां

पदयात्रा

पैनल चर्चा

पोस्टर प्रतियोगिता

लोक लेखा समिति के अध्यक्ष श्री पुंजा भाई वंश के साथ चर्चा

सार्वजनिक उपक्रमों संबंधी समिति के अध्यक्ष श्री प्रदीप सिंह जाडेजा द्वारा सम्बोधन

कोविड-19 के दौरान किए गए उत्कृष्ट कार्य के लिए कार्यालय प्रमुख एवं अन्य अधिकारियों द्वारा भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक से पुरस्कार प्राप्त करने की झलकियां

अधिक विकल्प, अधिक समस्याएं

मोनिका दवे
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

पिछले कुछ वर्षों में हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उपलब्ध विकल्पों में अधिकाधिक वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए चाय को ही लीजिए , कोल्ड टी लेंगे या हॉट, हॉट में दूध के साथ या बिना दूध के, बिना दूध के तो ब्लैक टी या ग्रीन टी और इसी प्रकार हर कैटेगरी में फिर कुछ और ऑप्शन्स।

पिछले कुछ सालों में, विशेषकर गत दशक में हमारे जीवन के हर क्षेत्र में उपलब्ध विभिन्न विकल्पों के कारण बहुत बदलाव आया है। जहां एक ओर इन विकल्पों ने हमारे कार्यों को आसान बनाया है, वहीं कहीं न कहीं हर छोटा-बड़ा निर्णय लेने की प्रक्रिया को थोड़ा जटिल भी बनाया है। घर की रोज़मर्रा की ज़रूरतें हों या लैपटॉप, टैबलेट, फ़ोन जैसे आधुनिक गैजेट्स, अनेक विकल्प उपलब्ध हैं । कपड़े, रेस्तरां का खाना, बिलों का भुगतान, घर के छोटे-मोटे मरम्मत के काम, ब्यूटी पार्लर, हेयर कटिंग, मालिश, दवाइयाँ, मेडिकल टेस्ट, संगीत, मनोरंजन, देश दुनिया की ख़बरें.. कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं दिखता जहां विभिन्न विकल्प उपलब्ध न हों।

पर अक्सर हम इतने सारे विकल्पों में से सबसे सही विकल्प चुनने की प्रक्रिया में ही उलझे रहते हैं और इस प्रक्रिया में कितना समय और कितनी ऊर्जा व्यय हुई, इस बात का आभास हम नहीं कर पाते । अस्सी के दशक में जब टेलीविज़न पर केवल दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रम ही उपलब्ध थे, हम सभी परिवार के साथ नियत समय पर उन गिने चुने कार्यक्रमों का आनंद उठाते थे। अब विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों की प्रत्येक कैटेगरी में इतने अधिक विकल्प हैं कि टेलीविज़न का रिमोट हाथ में लेकर हम चैनल सर्फिंग में ही अधिकांश समय गुज़ार देते हैं ।

कौन सा प्रोडक्ट किस ऐप पर सस्ता मिल रहा है, किस बैंक के किस कार्ड पर ज़्यादा कैशबैक मिल रहा है, टिकट बुकिंग किस साइट से करवाएं, होटल बुकिंग पर कहां अच्छे ऑफ़र हैं, खाना ऑर्डर करने के लिए किस ऑप्शन में डिस्काउंट अधिक है, वगैरह वगैरह...

अत्यधिक विकल्पों की उपलब्धता के इस दौर में लोभ संवरण करके इन्हें नज़रअंदाज़ कर पाना इतना आसान भी नहीं। इस तरह के विकल्प एक प्रकार का ट्रैप है जिसमें हम में से अधिकांश लोग फंसते चले जाते हैं । याद करिए, हमारे माता-पिता कैसे सीमित संसाधनों में, सीमित विकल्पों के साथ घर चलाया करते थे। अब हमारी ज़िंदगी के रोज़मर्रा के हर काम के लिए हम कितनी बार उपलब्ध विकल्पों में से सबसे सही विकल्प चुनने की प्रक्रिया से गुज़रते हैं? आज के आपाधापी भरे युग में हम जो तनाव हरदम महसूस करते हैं उसमें कुछ योगदान अत्यधिक विकल्पों की उपलब्धता का भी है। उपलब्ध विकल्पों की अधिकता के सकारात्मक पहलुओं से हम सभी वाक़िफ़ हैं, पर इसका दूसरा पहलू भी है जिसे हम नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। पढ़े लिखे आधुनिक साधन-संपन्न शहरी लोगों के अवसादग्रस्त होने के पीछे एक कारक विकल्पों का अतिरेक भी है ।

सामान्यतः यह एक चिर प्रचलित मान्यता रही है कि समाज के हर व्यक्ति के अधिकतम हित और कल्याण के लिए सबसे महत्वपूर्ण है अधिकतम व्यक्तिगत स्वतंत्रता। ये स्वतंत्रता मिलती है जब हम अपने लिए निर्णय स्वयं करते हैं और ये निर्णय लेने के लिए हमारे पास उपलब्ध विकल्पों में से हम सर्वश्रेष्ठ विकल्प चुन पाते हैं, और अपना हित और कल्याण सबसे बेहतर तरीके से सुनिश्चित करते है । जितने अधिक विकल्प उपलब्ध हों, निर्णय लेने में उतनी अधिक स्वतंत्रता हमें मिलती है,जो हमारे महत्तम हित को सुनिश्चित करती, पर क्या सच में ऐसा होता है ?
शायद नहीं।

अमरीकी मनोवैज्ञानिक बैरी श्वार्ट्ज द्वारा लिखित पुस्तक 'द पैराडॉक्स ऑफ चॉइस : व्हाय मोर इज़ लेस' इस विषय पर विभिन्न प्रकार के लोगों के व्यवहार का विश्लेषण करती है। श्वार्ट्ज अपनी पुस्तक में 'एनालिसिस पैरालिसिस' अर्थात विश्लेषण पक्षाघात की बात करते हैं। यह एक ऐसी परिस्थिति है जब उपलब्ध विकल्पों का गहन विश्लेषण करने के बाद निर्णय लेना असंभव बन जाता है, क्योंकि हम हर विकल्प से जुड़े जोखिमों और फ़ायदों का विश्लेषण करने के बाद किसी नतीजे पर पहुँच ही नहीं पाते और कोई भी निर्णय लेने में असमर्थ रहते हैं, जिस से निर्णय लेने की प्रक्रिया में अवरोध आ जाता है। अंततः हम या तो निर्णय नहीं कर पाते और कई बार निर्णय ले तो लेते हैं पर सही समय पर उचित निर्णय न ले पाने के कारण नुकसान उठाते हैं। इस तथ्य को कोई नकार नहीं सकता कि कोई विकल्प न होने

से बेहतर है कुछ विकल्प होना , परंतु यह ज़रूरी नहीं कि कुछ विकल्प होने की अपेक्षा अधिक विकल्प होना भी हमेशा हितकर हो । जितने कम विकल्पों में से हम चुनाव करते हैं, अपने निर्णय से असन्तुष्ट होने की संभावना उतनी कम होती है। वहीं दूसरी ओर जब अधिक विकल्पों में से हम एक का चुनाव करते हैं तो इस बात की संभावना अधिक होती है कि हम अपने निर्णय से अधिक असन्तुष्ट हों।

प्रारंभ में अधिक विकल्प अधिक संतुष्टि की ओर ले जाते हैं, लेकिन जैसे-जैसे विकल्पों की संख्या बढ़ती है, लोग अपनी पसंद से असन्तुष्ट होने लगते हैं , निर्णय लेने की प्रक्रिया में स्वयं पर अधिक दबाव महसूस करने लगते हैं। कम विकल्प अधिक संतुष्टि प्रदान करते हैं और सीमित समय में निर्णय लेने में मददगार साबित होते हैं।

मुझे लगता है कि अनगिनत विकल्पों के इस ट्रैप से बचने के लिए हमें ख़ुद से एक सीधा सवाल पूछना चाहिए "हम चाहते क्या हैं और हमारे पास समय कितना है ?" एक बार उद्देश्य परिभाषित कर लें तो अनेक विकल्पों में से अपने लिए सबसे उपयुक्त विकल्प चुनने की जटिल प्रक्रिया को सरल किया जा सकता है। विभिन्न विकल्पों का विश्लेषण करते समय यदि हम हर चरण में अपना उद्देश्य और समय सीमा स्पष्ट रूप से याद रखें और उसे उपलब्ध विकल्पों के अनुसार संशोधित न करें तो अनावश्यक विकल्पों को दरकिनार कर हम समयानुसार सही विकल्प चुन सकेंगे।

बाबू जी

रवि रंजन कुमार सिन्हा,
वरिष्ठ लेखा परीक्षक

मोम हृदय तन शाल बने
संताप में मेरे ढाल बने,
मानवता के पूरे सार हैं
सम्पूर्ण सघन संसार हैं।

शब्दों में बयां क्या करूँ, वह
अपरिमित क्षितिज विस्तार हैं।

प्यार की अनुपम परिभाषा
ज़िद वही हैं वही आशा,
क्या खेल-खिलौना घोड़ा गाड़ी
मेरे तो पूरे बाज़ार हैं।

शब्दों में बयां क्या करूँ, वह
अपरिमित क्षितिज विस्तार हैं।

शंख की मधुर ध्वनि हैं
सुदर्शन चक्र की धार हैं,
दर्द जो थोड़ा दिखलाई दे
शिव-धनुष टंकार हैं।

शब्दों में बयां क्या करूँ, वह
अपरिमित क्षितिज विस्तार हैं।

कुर्ता-पाजामा हैं होली के
सप्तदीप हैं दिवाली के,
खुशियाँ हैं बस उनसे हैं
मेले के ढ़ोल विस्तार हैं।

शब्दों में बयां क्या करूँ, वह
अपरिमित क्षितिज विस्तार हैं।

अनन्य अचल अविनाशी
वृन्दावन हैं वही काशी
गंगा की अविरल धार हैं।

मेरी वो पहचान हैं
माटी के जो मेरे शिल्पकार हैं।
शब्दों में बयां क्या करूँ, वह
अपरिमित क्षितिज विस्तार हैं।

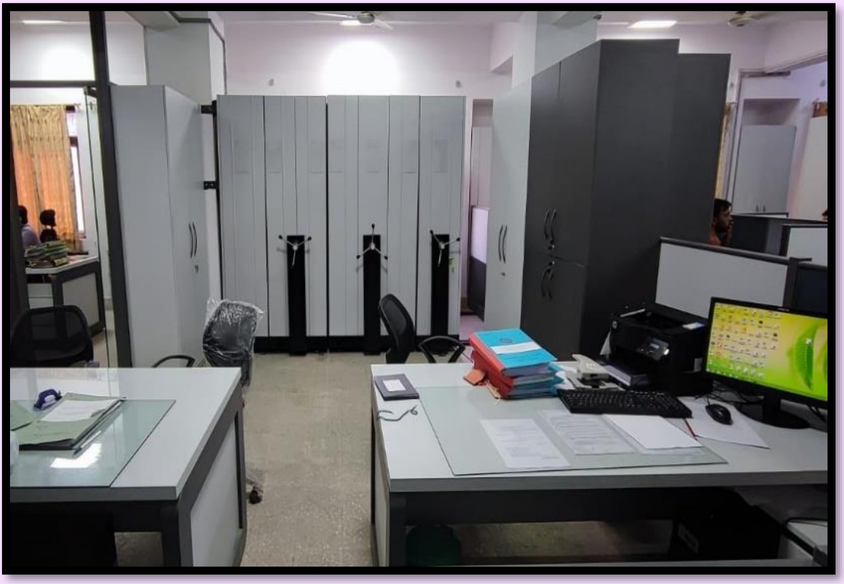

कार्यालय में बना नया मॉड्यूलर फर्नीचर

क्रिप्टोकरेंसी

राजीव कुमार गर्ग,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वर्तमान में सरकार के क्रिप्टोकरेंसी सम्बंधित चिंतन को लेकर यह शब्द काफ़ी चर्चा में है | क्रिप्टोकरेंसी क्या है ?

यह एक प्रकार की डिजिटल तथा आभासी (वर्चुअल) मुद्रा है | क्रिप्टो जैसा कि नाम से ही विदित है, यह मुद्रा या मुद्रा से सम्बंधित एक ऐसी सूचना है जिसे इनक्रिप्ट किया गया है | इसमें लेनदेन से सम्बंधित सभी जानकारियां भी कूटबद्ध अथवा इनक्रिप्ट हैं | विश्व भर में 1500 से भी ज्यादा क्रिप्टोकरेंसी हैं | मुख्य रूप से आजकल हम जिन क्रिप्टोकरेंसी का नाम सुनते हैं वो हैं:- बिटकॉइन, डॉजकॉइन, लिब्रा, एक्स.आर.पी, इथीरियम, टीथर आदि।

क्रिप्टोकरेंसी को लेकर वर्तमान में चिंता का सबसे बड़ा विषय इस मुद्रा का नियमन है। इस मुद्रा का प्रचलन पूरे विश्व में है परन्तु इस मुद्रा का नियमन कौन करेगा ? उदाहरण हेतु भारत की अर्थव्यवस्था में मुद्रा तथा मुद्रा के प्रवाह के नियमन का कार्य भारतीय रिज़र्व बैंक (आर.बी.आई.) द्वारा किया जाता है | इस मुद्रा के प्रचलन में आने से वित्तीय लेन-देन में बैंकों की भूमिका एक तरीके से समाप्त हो जाएगी। अतः उस लेन देन को या मुद्रा को नियमित किया जाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य होगा।

भारत में क्रिप्टोकरेंसी :- आर.बी.आई. के अप्रैल 2018 के परिपत्र के माध्यम से आर.बी.आई. के अंतर्गत कार्य करने वाले बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं द्वारा क्रिप्टोकरेंसी सम्बंधित लेनदेन के सत्यापन करने पर रोक लगा दी गई थी। इसी आधार पर सुप्रीमकोर्ट में दायर की गयी याचिका पर निर्णय देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने उपरोक्त परिपत्र को अनुछेद 19 (1) (जी) के तहत व्यापार और पेशे की स्वतन्त्रता का उल्लंघन करने वाला बताकर, उक्त परिपत्र पर रोक लगा दी। तदुपरान्त वित्त मंत्रालय द्वारा क्रिप्टोकरेंसी पर प्रतिबन्ध एवं आधिकारिक डिजिटल मुद्रा विनियमन विधेयक 2019 का एक प्रारूप संसद में रखा गया। उक्त प्रारूप के अनुसार देश

में क्रिप्टोकरेंसी का व्यापार करने पर 10 वर्ष तक की सजा और आर्थिक दंड का प्रावधान था। वर्तमान में सरकार ने क्रिप्टोकरेंसी एवं आधिकारिक डिजिटल मुद्रा विनियमन बिल संसद में पेश किया है जिसके अनुसार आने वाले समय में कुछ नये कानून अथवा नियम लागू किये जा सकते हैं।

क्रिप्टोकरेंसी से सम्बंधित चुनौतियाँ :-

1) वर्तमान में उपलब्ध लगभग सभी क्रिप्टोकरेंसी निजी संस्थाओं अथवा व्यक्तिओं द्वारा जारी की गयी हैं अतः उनको किसी देश अथवा केन्द्रीय बैंक की मान्यता नहीं है।
2) मूल्य की अस्थिरता भी क्रिप्टोकरेंसी से संबंधित एक चिंताजनक विषय है।
3) गोपनीयता के चलते किसी भी गैरकानूनी गतिविधियों में इसका उपयोग किया जा सकता है तथा गोपनीयता के चलते ही कर कर-अपवंचन (कर-चोरी) की एक समस्या खड़ी हो जाएगी।

वैश्विक स्तर पर क्रिप्टोकरेंसी की बढ़ती हुई लोकप्रियता, तथा पश्चिमी देशों के इसके प्रति सकारात्मक रुख को देखते हुए क्रिप्टोकरेंसी के विनियमन सम्बन्धी समाधान की आवश्यकता दिखाई पड़ती है|

"ऑडिट जागरूकता सप्ताह" के अंतर्गत आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम

फ़रियाद

राजेश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

वह जब साथ होते तो होता
हर दिन निराला।
वह जब दूर चले गए तो हो गया
यह सफ़र भी सूना।।

मिले थे उनसे इन्हीं राहों में कभी,
बिछड़ना भी इन्हीं राहों में था, यह पता न था।
आए थे सभी अपनी हस्ती बनाने,
किसने ये जाना कोई टिकता नहीं इधर।।

वक्त भी करवटें बदलता रहा,
रहा न कोई किनारा एक सा।
हर मोड़ पर मिला कोई नया,
जिसमें हम खोजते रहे तुम्हारी छवि।
मिला नहीं तुम सा कोई, जाने कहाँ खो गए थे तुम।।

बढ़ते गए हम भी आगे,
रुकना हमारे बस में न था जो,
आज भी तलाश है हमें तुम्हारी,
हर शख्स में ढूंढते हैं छवि तुम्हारी।

ऐ वक्त! लौटा दो हमें हमारी खुशियाँ,
जिसमें सिमटी हुई है हमारी दुनिया।
वही दुनिया जहाँ बसी है हमारी यारी।
ऐ यार। ज़रा तुम भी सोचो....... कभी तुम्हें भी तलाश थी हमारी।।

अहमदाबाद इकोनॉमिस्ट इंटेलीजेंट यूनिट (ई.आई.यू.) की सूची में

रीना अभ्यंकर
पर्यवेक्षक

इकोनॉमिस्ट इंटेलिजेंस यूनिट (ई.आई.यू.) द्वारा हाल ही में जीवनयापन के स्तर और खर्च के आधार पर एक सर्वेक्षण, "Worldwide cost of living survey 2021" किया गया और विश्व में रहने के लिए 173 सस्ते शहरों की एक सूची दिसंबर, 2021 में जारी की गई। निम्नलिखित दस शीर्ष शहरों में भारत के गुजरात राज्य में स्थित अहमदाबाद को सातवें स्थान पर सूचीबद्ध किया गया।

क्रम सं.	शहर का नाम	देश का नाम
1.	दमास्कस	सीरिया
2.	त्रिपोली	लीबिया
3.	ताशकंद	उज़्बेकिस्तान
4.	तुनिस	तुनिशिया
5.	अलमाटी	कज़ाकस्तान
6.	कराची	पाकिस्तान
7.	अहमदाबाद	भारत
8.	अल्जियर्स	अल्जीरिया
9.	ब्यूनस एरेस	अर्जेंटीना
10.	लुसाका	ज़ाम्बिया

सस्ते की खोज में पूरा अहमदाबाद घूमते हुए अहमदाबादियों के शहर को अब सच में सब से सस्ते शहर का दर्ज़ा मिल गया है। पूरे भारतवर्ष में सब से सस्ता शहर अहमदाबाद को घोषित किया गया, यह हमारे लिए गर्व का विषय है। अहमदाबाद देश का पहला हेरिटेज शहर है। हाल ही में स्वच्छ भारत सर्वे में

चालीस लाख से ज़्यादा आबादी वाले शहरों में प्रथम स्थान भी अहमदाबाद को दिया गया। बी.आर.टी.एस. के सुचारु संचालन, रिवर फ्रंट की सुन्दर व्यवस्था, स्मार्ट सिटी की गतिविधियों के लिए भी हमारे अहमदाबाद को विभिन्न अवार्ड्स मिले हैं।

सस्ती चीज़ों की ख़रीददारी करने हेतु लाल दरवाज़ा, तीन दरवाज़ा, मानेकचौक, ढालगरवाड, रतनपोल आदि बहुत प्रख्यात हैं । साबरमती नदी के तट पर हर रविवार को गुजरी लगती है जिसे देखने लोग अपने बच्चों को ले कर आते हैं। वहां पुरानी किताबें, सिक्के, फर्नीचर, घर का सामान, एंटीक चीज़ें आदि सस्ते दाम पर उपलब्ध होते हैं। लॉ-गार्डन और नेहरु नगर का पाथरना बाज़ार भी कपड़े और लरी के लिए शानदार जगहें मानी जाती हैं । नवरात्रि के दौरान तो वहां मेले जैसा माहौल होता है । रिलीफ़ रोड इलेक्ट्रॉनिक बाज़ार, गाँधी रोड इलेक्ट्रिक बाज़ार और घड़ी का बाज़ार है। सुविधा शोपिंग सेंटर के सामने और मानसी टावर के सामने पगरखा बाज़ार है । इन सब बाज़ारों में सस्ते दाम पर चीजेंउपलब्ध होती हैं ।

परिवहन हेतु पब्लिक बस (ए.एम.टी.एस.), बी.आर.टी.एस., ऑटोरिक्शा, शटल रिक्शा आदि आसानी से उपलब्ध होता है, जिनका किराया भी कम होता है । बी.आर.टी.एस. में तो वाईफाई. भी उपलब्ध है ।

अब तो साइकिल और छोटी इलेक्ट्रिक बाइक (यूलू) भी किराये पर मिलते हैं । व्यवस्था तो देखो किराये पर ली गयी साइकिल और यूलू गंतव्य पर नियत स्थान पर रख सकते हैं ।

मेडिकल सर्विस की बात करें तो वी.एस., सिविल, एस.वी.पी., जीवराज, शारदाबेन, एल.जी. जैसे अस्पतालों में बीमारियों का इलाज कम दाम में हो सकता है । अब तो लोगों को अर्बन हेल्थ सेंटर, आरोग्य केंद्र में मुफ़्त और अच्छा

इलाज मिलता है। सरकार ने माँ कार्ड, आयुष्मान कार्ड जैसी सुविधा भी दी हैं जिस से रोगियों का बिलकुल मुफ़्तइलाज किया जाता है ।

ट्रैफ़िक भी सुचारू रूप से संचालित किया जाता है, व हर सिग्नल पर पुलिस कर्मी तैनात होते हैं। अब तो मॉडर्नाइज़ेशन के तहत हर सिग्नल पर कैमरे लगे हैं जिस से ट्रैफ़िक नियंत्रण अच्छी तरह से होता है।

ज़रुरी काम से जाना हो तो देर रात को भी लेडीज़ अकेली जा सकती हैं, सिक्योरिटी है।

गाँधी आश्रम, सरदार स्मारक, केलिको म्यूज़ियम, हठीसिंग देरासर, इसकोन मंदिर, जैसे कई देखने योग्य स्थान अहमदाबाद में हैं।

इस तरह से हमारा अहमदाबाद सही मायने में बहुत ही अच्छा, सस्ता और ख़ूबसूरत शहर है। जो एक बार कुछ दिन यहाँ रहता है, यहीं बस जाता है। हम अहमदाबादी अपने आप को गौरवान्वित महसूस करते हैं।

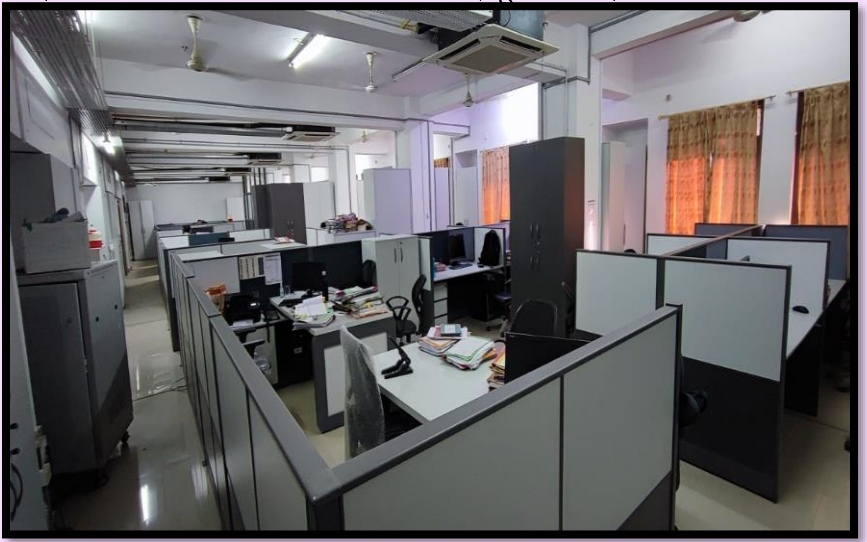

कार्यालय में बना नया मॉड्यूलर फर्नीचर

चाय

रूपेश रंजन तिवारी
लेखा परीक्षक

मिल जाते कुछ दोस्त
कार्यालय, राह या घर पर
चुस्की ले चाय की
होता मन सरोवर

अजीब है दुनिया
तनाव हैं इसमें भरकर
पी एक प्याली चाय की
मिलती ऊर्जा भरकर

बन जाते दोस्त अंजान
बस चाय साथ पीकर
जब मिल बैठे बिछड़े दोस्त पिएँ चाय
तो जाता अमृत भीतर।

हरी , सादी , पीली , काली चाय
है सभी के लिए
मिल जाती जिसे भी
रंगती उसे अपने रंग में।

ख़ुशी क्या है ...???

रेशमा दातवानी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ख़ुशी की यात्रा, स्वामित्व, अर्जित, पहना या उपभोग नहीं किया जा सकता है। ख़ुशी हर मिनट को प्यार, अनुग्रह और कृतज्ञता के साथ जीने का आध्यात्मिक अनुभव है।" - डेनिस वेटली

हम इंसान कुछ न कुछ हासिल करने के लिए लगातार दौड़ में रहते हैं, उम्मीद करते हैं कि उसे हासिल करने से हमारे जीवन में ख़ुशियाँ आएंगी। लेकिन क्या ऐसा करने से हमें सचमुच ख़ुशी मिलती है? हर बार जब हम कुछ हासिल करते हैं, तो हम एक नया लक्ष्य निर्धारित करते हैं जो हमें लगता है कि हमें ख़ुशी देगा। और सिलसिला चलता रहता है। हम में से अधिकांश लोग इन उपलब्धियों की सराहना करने में असफल होते हैं और परिणामस्वरूप ख़ुशी का अनुभव करने में असफल होते हैं।

लेकिन क्या आपको सच में लगता है कि ख़ुश रहने के लिए आपको कुछ नियमों और शर्तों पर निर्भर रहना पड़ता है? मुझे लगता है कि ख़ुशी परिस्थितियों और अन्य कारकों के बजाय हम पर निर्भर करती है। हम अपनी ख़ुशी के लिए खुद ज़िम्मेदार हैं।

हम अक्सर ऐसे लोगों से मिलते हैं जो हर संभव तरीके से सफल प्रतीत होते हैं लेकिन ख़ुद से ख़ुश नहीं हैं। दूसरी ओर, ऐसे लोग हैं जिनके पास बहुत कम है लेकिन फिर भी उनके पास जो कुछ भी है उससे ख़ुश और संतुष्ट दिखते हैं। मुझे लगता है कि मूल मंत्र है, अगर आप ख़ुश रहना चाहते हैं, तो आपको पल में जीना होगा। वर्तमान में रहें। पिछली घटनाओं या भविष्य की योजना बनाने में समय बर्बाद न करें। कोई भी अतीत को नहीं बदल सकता और न ही भविष्य की भविष्यवाणी कर सकता है। यदि कोई व्यक्ति केवल पिछली ग़लतियों से सीख सकता है और उसे अनुभव में बदल सकता है, तो वह कोशिश कर सकता है कि भविष्य में वही ग़लतियाँ न हों। जीवित रहना और जीवन में एक और दिन देखना अपने आप में ख़ुश रहने का सबसे महत्वपूर्ण कारण है। भविष्य की अनिश्चितता ही जीवन को साहसिक बनाती है।

प्रत्येक जीवित क्षण को संजोने से ख़ुशी मिलती है। अगर हम ख़ुश नहीं हैं तो हमें इसका दोष दूसरों पर या परिस्थितियों पर नहीं थोपना चाहिए। सुख भौतिकवादी या आश्रित नहीं होना चाहिए। यह आंतरिक संतुष्टि नहीं देता है जिसके परिणामस्वरूप वास्तविक ख़ुशी होती है।

कभी-कभी सिर्फ़ पेड़, बारिश, आसमान आपको ख़ुश कर सकते हैं, अगर आप अपने दिमाग़ को जीवन की नकारात्मकता ख़ुद साफ़ करने की अनुमति देते हैं। जब से हम इस दुनिया में पैदा हुए हैं, दुनिया एक जटिल जगह रही है लेकिन, हमें ख़ुश रहने के लिए अपने भीतर सकारात्मकता ढूंढनी होगी। कभी-कभी दूसरों के प्रति दया, करुणा और प्रेम का एक छोटा सा कार्य बहुत अधिक आनंद, संतुष्टि और ख़ुशी ला सकता है। यही सच्ची ख़ुशी आपको महसूस होगी।

कई बार, सामाजिक, पारिवारिक और रिश्तों के दबाव के कारण हम उन परिस्थितियों के आगे झुक जाते हैं जो हमारे दुख का कारण बन जाती हैं। लेकिन मुझे लगता है कि अपनी ख़ुशी के लिए थोड़ा स्वार्थी होना ठीक है जब तक कि यह किसी और के लिए हानिकारक न हो। हर किसी को एक समय में ख़ुश करना संभव नहीं है, चाहे वह आपके समाज में हो, आपके दोस्तों में हो, आपके परिवार में हो, तो क्यों न ख़ुद को ख़ुश रखने पर ध्यान दें।

हम अक्सर अपनी तुलना दूसरों की सफलता, प्रसिद्धि और नाम से करते हैं जिससे हमारे मन की शांति भंग होती है। लेकिन इस प्रक्रिया में, हम अपनी ख़ुद की यात्रा की उपेक्षा करते हैं और यह महसूस करने के लिए संघर्ष करते हैं कि हम ख़ुद कितनी दूर आ गए हैं। और यह भी कि कोई और ख़ुद की तुलना हमसे कर रहा होगा। हमें यह समझना चाहिए कि हम में से प्रत्येक अपने तरीके से विशेष है और ख़ुश रहने के योग्य है।

जैसा कि दादा वासवानी ने उद्धृत किया है - "ख़ुशी, सच्चा सुख, एक आंतरिक गुण है। यह एक मानसिक अवस्था है। अगर आपका मन शांत है, तो आप ख़ुश हैं। अगर

आपका मन शांत है, लेकिन आपके पास और कुछ नहीं है, तो आप ख़ुश रह सकते हैं। यदि आपके पास वह सब कुछ है जो दुनिया दे सकती है - सुख, संपत्ति, शक्ति- लेकिन मन की शांति की कमी है, तो आप कभी भी ख़ुश नहीं हो सकते।"

इसलिए अपने दिल की बात मानें, दूसरे लोगों की मंज़ूरी का इंतज़ार न करें। ख़ुश रहना हमारा अधिकार है। अपनी ख़ुशी के मालिक खुद बनें और अपना जीवन पूरी तरह से जिएं।

कार्यालय का हरा-भरा सुंदर प्रांगण

कृषक –जीवन

शिवानंद
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

रात्रि के चौथे पहर में छोड़ दिये हैं मुख्य द्वार,
कर्मभूमि अब पहुँच चुके हैं अन्न-देव जगपालनहार,
मुस्कुराहटों से फसलों ने किया जनक को नमस्कार
भाव विभोर हो गए हैं देख फसलों की बहार,
सूर्यदेव नव-किरणों से अभिनंदन करते बार-बार,
अंशुमाली को कर प्रणाम आरंभ किया निज-रोज़गार।

जुताई, गुड़ाई, सिंचाई, कटाई कार्य के हैं विविध रूप,
स्वेद बूंदे बह रही हैं भाल से उनके अटूट,
मध्याह्न बेला हो चुकी है सिर पर तप रही धूप,
जठराग्नि बढ़ती जा रही है गले गए हैं सूख,
किन्तु बढ़ते हौसलों से अड़चनें भी होती अनुरूप,
घर से आयी रोटी खाकर मिटा रहे उदर की भूख।

सूर्यास्त होने को है पर कार्य अभी भी जारी है,
दूर क्षितिज पर प्रतीची में अब भी थोड़ी लाली है,
तेज़ी से प्रस्थान कर रहे वे घरों को अपने,
रामदुहारी करते रहते मिलते जिससे-जिससे।

महात्मा की भूमि गुजरात में मेरा अनुभव

शैलजा पांडे
उप महालेखाकार (भूतपूर्व)

अकादमी में प्रशिक्षण सम्पन्न होने पर, पहली पोस्टिंग अहमदाबाद में होने पर मैं बहुत हर्षित हुई, गुजरात के नवरात्रि त्योहार से लेकर गीर के वीर शेरों के बारे में बहुत कुछ सुन चुकी थी, अतः पहली बार गुजरात में रहने के लिए मैं उत्सुक थी।

गुजरात में प्रवेश कर, पहले दिन से ही मुझे स्वयं के घर जैसा अनुभव हुआ, पहली सुबह ढोकला, खांडवी व पात्रा खा कर मैं फूली नहीं समाई, दिल को छू जाने वाली एक मुख्य बात थी कि यहाँ बहुत शांत व सुरक्षित वातावरण था, रात्रि में भी स्त्रियाँ निडर बाहर घूम सकती हैं, महिलाओं के प्रति यह सम्मान, गुजरात का गर्व है।

इसके अतिरिक्त गुजरात में मुझे भिन्न-भिन्न प्रकार के वस्त्र देखने का अवसर मिला। अहमदाबाद को "मैनचेस्टर-ऑफ़-इंडिया" की उपाधि मिली है, यहाँ सूती कपड़े उत्तम श्रेणी के मिलते हैं। मैंने 'बांधनी' साड़ी और गरबा करने के लिए "चणिया चोली" भी खरीदी।

गुजरात में मेरा कार्यालय का अनुभव भी अच्छा रहा, गुजरात विधान सभा में बैठक, हिन्दी पखवाड़े की प्रतियोगिताओं में निर्णायक बनने का अवसर व ऑडिट पार्टियों से बातचीत कर मैंने बहुत कुछ समझा, सीखा और जाना।

इसके अलावा गुजरात में पुण्य भूमि द्वारका हो कर आई। वहाँ मैंने श्री कृष्ण के दर्शन किए, मेरे लिए यह आध्यात्मिक अनुभव भव्य था।

महात्मा की भूमि गुजरात में सबसे अच्छा अनुभव मुझे साबरमती आश्रम में हुआ, मैंने गांधी जी का कक्ष, उनकी रसोई व उनके द्वारा प्रयोग किए चरखे भी देखे। वहाँ जा कर स्वतन्त्रता की लंबी लड़ाई मेरी आँखों के समक्ष चल पड़ी।

गुजरात में आकर मुझे और भी बहुत कुछ अनुभव करना है, मैं कच्छ के रण उत्सव में जाने के लिए उत्सुक हूँ, मुझे वड़ोदरा के महलों की भी सैर करनी है। आशा है कि शीघ्र ही मुझे गुजरात की इस भव्य भूमि का और भ्रमण करने का अवसर मिलेगा।

"ऑडिट जागरूकता सप्ताह" के अंतर्गत आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता की निर्णायक सुश्री रूपल प्रकाश, वरिष्ठ उपमहालेखाकार

गंगा का अभियोग

शैलजा पांडे
उप महालेखाकार (भूतपूर्व)

शिव के मस्तक से उत्पन्न हुई,
मैं निर्मल, पावन धारा।
मनुष्य की सभ्यताओं को, ममता से जिसने पाला,
नीर, सिंचाई, धर्म सभी,
उपकारता का पूरा किया कर्तव्य यहीं।
जलीय जंतु व जैव विविधता का सूत्र भी।

परन्तु, हे मनुष्य ! ये तूने कैसा मुझे उपहार दिया,
प्लास्टिक, कचरे व शवों से क्यों तूने मुझे लाचार किया?
क्यों तेरे उद्योगों ने मेरा संहार किया?
विशाल से तेरे बांधों ने, मेरी धारा का विनाश किया?

हे मनुष्य !
जिस गंगा को परमात्मा स्वरूप पवित्र पूजता है,
आज उस गंगा को पुन: निर्मल व पावन बना।
प्रेम व संकल्प प्रकट कर इस माता को,
गंगा की पुन: उच्च प्रतिष्ठा लौटा।

जल संकट

शैलेष देसाई
लेखा परीक्षक

वर्तमान परिदृश्य में भारत में जल संकट खाद्य संकट से भी ज्यादा गहराता जा रहा है। खाद्य संकट को तो हमने बहुत हद तक काबू में कर लिया है लेकिन जल संकट से उबर पाना आसान प्रतीत नहीं होता। सरकारी आंकड़े के हिसाब से भारत के करीब साठ फीसदी लोग जल संकट का सामना कर रहे हैं। बढ़ती आबादी के साथ भारत में प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता में भी कमी होती जा रही है। हालांकि भारत में पर्याप्त बारिश होती है लेकिन सही प्रबंधन न होने के कारण अधिकतर जल समुद्र में बह जाता है। नदियों और अन्य जलाशयों के रूप में एकत्रित जल का सही उपयोग न होने से भी यह संकट दिन ब दिन गहराता ही जा रहा है।

कृषि ऐसा क्षेत्र है जिसमें जल का दुरुपयोग सबसे ज़्यादा हो रहा है। खेतों में सिंचाई के लिए खर्च किए गए जल का आधा ही फसल के लिए उपयोगी होता है। इस कारण से भू-जल का स्तर भी घटता जा रहा है और हर वर्ष बोरवेल की गहराई बढ़ती ही जा रही है। इसके अलावा कपड़ा, पेपर, चमड़ा आदि उद्योगों में भी जल का उपयोग सही तरीके से नहीं किया जाता जिसके कारण नदियों और जलाशयों के जल की गुणवत्ता पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

जल संकट को केवल जल को संजो कर दूर नहीं किया जा सकता बल्कि इसके उचित प्रबंधन और दुरुपयोग को रोकना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। इसके लिए जल को दूषित होने से रोकने के सभी उपाय, कृषि और उद्योगों में जल की कम खपत करने की व्यवस्था भी ज़रूरी है।

पर सबसे ज़रूरी यह है कि हम जल को संसाधन के रूप में पहचानें। इस संसाधन को अल्पावधि के आराम के लिए दुर्लभ न बनाते जाएँ। हम नई कहावत का सृजन करें- 'पानी को पैसे की तरह संजोना'।

हमारी खम्भात यात्रा”

संदीप कुमार
डाटा एंट्री ऑपरेटर

साल 2021 की शुरुआत में जब मैं और मेरे दो सहकर्मियों ने साईकल से जनवरी-फरवरी माह में क्रमशः “लोथल” तथा “नलसरोवर” स्थानों की यात्रा की तो दोनों स्थानों पर पहुँचने के बाद हमें निराशा ही हाथ लगी क्योंकि हड़प्पाकालीन शहर “लोथल” म्यूज़ियम मरम्मत के कार्यो के कारण बंद पड़ा था तो “नलसरोवर पक्षी अभ्यारण्य” भी बर्ड फ्लू बीमारी के कारण बंद कर दिया गया था।

एक दिन जब मैंने साइकल से खंभात जाने का विचार अपने सहकर्मी को बताया तो और उससे साथ चलने का अनुग्रह किया तो उसने स्वयं जाने के लिए तो आनाकानी की, लेकिन अपने दोनों बेटों को मेरे साथ भेजने के लिए हामी भर दी। हम लोगों की यात्रा 10 जुलाई को इस्कॉन मंदिर से सुबह 4:18 पर शुरू हुई।

सुबह सात बजे राष्ट्रीय राजमार्ग 47 से होते हुए हम लोग खेड़ा ज़िले की सीमा तक पहुंचे। वहाँ से तीन किलोमीटर दूर मातर गाँव के पास एक पेट्रोल पंप पर हमने जलपान किया और खम्भात की ओर चलना प्रारंभ किया।

सुबह के करीब 9:30 बजे हम परिएज गाँव के पास पानी पीने के लिए रुके। जब हमने वहाँ मौजूद लोगों से कैंपर से पानी पीने की इजाज़त मांगी तो सहर्ष उन्होंने हम तीनों को चारपाई पर बैठाकर पानी पिलाया। जब उनको यह पता चला कि हम लोग साइकिल द्वारा अहमदाबाद से खम्भात जा रहे हैं, तो उन लोगों को बड़ा अचरज हुआ। एक बुज़ुर्ग चाचाजी को हिंदी बिल्कुल नहीं आती थी और हमें उनकी गुजराती भाषा समझ नहीं आ रही थी।

जैसे-तैसे मैंने अपने छह साल के गुजराती अनुभव के सहारे उनको अपनी बात समझाने की कोशिश की जो थोड़ी बहुत ही कारगर साबित हुई।

इसी बीच पता नहीं कब उन लोगों ने हमारे लिए ठन्डे पेय की तीन बोतलें मंगवा दीं। जब मैंने कीमत चुकानी चाही तो बुज़ुर्ग समेत तमाम लोगों ने एक स्वर में ना बोल दिया। मैंने थोड़ी देर के बाद चलने की इजाज़त मांगी।

परिएज गाँव से मीठी यादें लेकर हम लोग तारापुर कस्बे तक पूरे जोश के साथ बहुत कम समय में पहुँच गये। तारापुर से खम्भात के लिए एक सीधी सड़क जाती है इसलिए किसी से ज़्यादा पूछने की जरूरत नहीं पड़ी।

खम्भात से सात किलोमीटर पहले करीब ग्यारह बजे हम लोगों ने खाना खाया। सुबह 3 बजे बनाया हुआ खाना दिन के ग्यारह बजने तक ठंडा हो गया था। खाना खाने के बाद पुनः हमने अपनी साइकिलों का रुख खम्भात की ओर कर दिया।

आधे घंटे की मश्क्कत के बाद आख़िरकार हमलोग अहमदाबाद शहर (भारतीय लेखा एव लेखा परीक्षा विभाग के स्टाफ़ क्वार्टर) से 107 किलोमीटर दूर दक्षिण में स्थित खम्भात पहुँच ही गए। हम लोग बाहरी रास्ते से जाते हुए शहर के अंदर घुसे तो कुम्भलगढ़ के किले जैसे एकदम खड़ी ढलान दिखाई दी।

ढलान से नीचे उतरते हुए ब्रेक लगाने पर भी साइकिल के टायर स्लिप कर रहे थे। जगह भी थोड़ी संकरी थी, ढलान की तलहटी पर लोगों ने भैंस, बकरी बाँध रखी थी जिससे दुर्घटना का ख़तरा बना रहता है। हम लोग जब शहर के दूसरे कोने पर पहुँचे तो पता चला कि दरिया अभी भी चार पांच किलोमीटर दूर है।

सड़क के अंतिम छोर तक पहुँचे तो पता चला कि दरिया का पानी यहाँ तक केवल अमावस्या के दिन ही आता है बाकी दिनों यहाँ से काफ़ी दूर ही रहता है। वहाँ से खड़े होकर दूर दूर तक देखने पर पूरा खाली पड़ा मैदान एव कीचड़ दिखाई दे रहा था। एक किलोमीटर के करीब हम लोग पैदल चलकर अंदर भी गए लेकिन जब दलदली ज़मीन शुरू हुई तो हमने आगे जाना मुनासिब नहीं समझा।

लोथल, नलसरोवर की तरह यहाँ पहुचने के बाद निराशा ही हाथ लगी। दिन के लगभग साढ़े बारह बज चुके थे। चिलचिलाती धूप और उमस से खड़े होना भी दूभर

हो रहा था। हमारा पानी भी ख़तम हो चुका था। जब हम साइकिल की तरफ वापिस आये तो वहाँ अहमदाबाद से ही अपनी कार में खम्भात का दरिया देखने आये एक परिवार से मुलाकात हुई। उन्होंने हमको पानी पिलाया तथा खाने के लिए भी पूछा जिसको हमने विनम्रता पूर्वक मना कर दिया। थोड़ी देर बाद हम अहमदाबाद की ओर चल पड़े।

अब वही खड़ी ढलान सीना तान के हमारे सामने खड़ी थी। हम लोगों ने साइकिल से नीचे उतरकर नतमस्तक होकर उसकी चढ़ाई की। पैदल चढ़ने के बाद भी हमारे पसीने छूट गए। चढ़ाई पूरी करते ही हमने राहत की सांस ली। वहीं एक दरगाह पर हमने पानी पिया।

दिन के करीब सवा बजे हम खम्भात से अहमदाबाद की ओर वापिस निकले। गर्मी और उमस के साथ हवा का बहाव भी हमारे विपरीत हो गया था जिससे साइकल चलाने में बड़ी कठिनाई आ रही थी।

हमने गूगल पर दिखाए गए अहमदाबाद के पैदल रास्ते पर चलने की सोची क्योंकि यह गाडी/बाइक के रास्ते से 7 किलोमीटर कम पड़ रहा था। 10 किलोमीटर तक उसी सड़क, जिस पर हम लोग अहमदाबाद से खम्भात आए थे, पर चलने पर हम लोग गूगल मानचित्र के दिशा-निर्देश पर खम्भात-खेड़ा राजमार्ग को छोड़ कर एक लिंक रोड की ओर बढ़ चले।

लगभग पन्द्रह किलोमीटर चलने के बाद गूगल महोदय ने हम लोगों को एक नाले पर जो एकदम सूखा, कंटीली झाड़ियों वाला एवं पगडंडी रहित था, पर लाकर छोड़ दिया। गूगल मानचित्र पर उस नाले की लम्बाई दो किलोमीटर दिखाई पड़ रही थी। दो किलोमीटर चलना तो दूर उस कंटीले नाले पर पैर रखने की भी जगह नहीं थी। एक राहगीर से पूछने पर पता चला कि हम लोग ग़लत रास्ते पर आ गए हैं। उसने तीन किलोमीटर और आगे चलने को कहा।

जब वहाँ से हमने गूगल मानचित्र पर अहमदाबाद की दूरी देखी तो हम लोग चौंक गए क्योंकि वहाँ से अब भी अहमदाबाद 90 किलोमीटर दिख रहा था। हम सब मायूस हो गए कि अब तक खम्भात से जो दूरी तय की वो सब व्यर्थ ही चली गयी।

थोड़ी देर रुकने के बाद हम लोगों ने मायूस चेहरों के साथ अहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया। गुमनाम रास्तों पर साइकिल से चलते-चलते हम लोग गोधूलि तक धोलका कस्बे से 30 किलोमीटर और अहमदाबाद शहर से 70 किलोमीटर दूर एक छोटे से अनजान गाँव पहुंचे।

लगातार कई घंटों की कड़ी मशक्कत के बाद हम लोग रात्रि 8:30 बजे धोलका पहुंचे जहां से अहमदाबाद (ए जी कॉलोनी) 45 किलोमीटर दूर था। धोलका में थोड़ा जलपान करने के बाद हम लोगों ने पुनः अहमदाबाद के लिए प्रस्थान किया। बीस किलोमीटर चलने के बाद हमने रात्रि भोजन किया।

थोड़ा रुकने के बाद शरीर में अकड़न शुरू हो गयी जिससे दोबारा साइकिल चलाने में बहुत मुश्किल हो रही थी। सड़क पर चल रहे भारी भरकम वाहनों की लाइट्स तथा पास से गुज़रने के कारण तेज़ हवा के झोंकों के कारण साइकल चलाना खतरे से खाली नहीं था |

धोलका से कुछ दूर चलने के बाद एक साइकल के टायर में पंक्चर हो गया। आसपास साइकिल की कोई दुकान न होने के कारण लगभग दो-तीन किलोमीटर तक पैदल चले जहाँ से कुछ और आगे मैंने मेरे सहकर्मी को बुला लिया था क्योंकि रात्रि के ग्यारह बज चुके थे और साइकिल पंक्चर की दुकान मिलने की सम्भावना नगण्य थी।

उजाला चौकड़ी पहुँचने पर सहकर्मी बाइक से अपने लड़के को पीछे बिठाकर उसकी साइकिल भी साथ ले गया। मै इस्कॉन ,मंदिर होता हुआ रात्रि बारह बजे के करीब ए जी कालोनी के अपने सरकारी आवास पर पहुंचा। घर पहुँचने पर शरीर में बहुत दर्द हो रहा था।

मध्य रात्रि के पहर में ही मैंने दर्द कम करने की दवा ली तथा सो गया। सुबह जब उठा तो शरीर में अकड़न बनी हुई थी, चलने फिरने में भी दर्द हो रहा था जो शाम होते होते कम हो गया। ये थी हमारी अहमदाबाद से खम्भात की कुल 228 किलोमीटर की साइकिल यात्रा जो हमेशा हमारे ज़हन में रहेगी।

गणतंत्र दिवस – 2022 के अवसर पर कार्यालय की आंतरिक सजावट

डिसीज़न मेकिंग – हर्बर्ट साइमन के सिद्धांत

डॉ. संदीप कुमार बाजपेई
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

विश्वविद्यालय में परास्नातक कक्षा के द्वितीय वर्ष में प्रशासन एवं प्रबंधन के चिंतकों से संबंधित एक पाठ्यक्रम था। इस पाठ्यक्रम में कई विख्यात चिंतकों के द्वारा प्रतिपादित विभिन्न सिद्धांतों को सीखने-समझने का अवसर प्राप्त हुआ, जैसे – फ़्रेडरिक टेलर, हेनरी फ़ेऑल, चेस्टर बर्नार्ड, मेरी पार्कर फ़ॉले, हर्बर्ट साइमन इत्यादि ।

इनमें से कुछ विचारकों के सिद्धांत विशेषकर औद्योगिक उत्पादन तथा संगठनों के लिए उपयोगी हैं तो कुछ के सिद्धांत इन के अतिरिक्त सभी प्रकार के कार्यालयों तथा हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन के लिए भी उपयोगी हैं।

मेरे मस्तिष्क में इस प्रकार के सिद्धांतों में सर्वप्रथम हर्बर्ट साइमन (1916-2001) के कुछ सिद्धांत आते हैं जिनका प्रयोग हम अपने जीवन को आसान बनाने में कर सकते हैं। इन में कुछ सिद्धांत इस प्रकार हैं:

1. **प्रोग्राम्ड और नॉन- प्रोग्राम्ड डिसीज़न**

साइमन का विचार है कि अपने प्रतिदिन के कार्यों के संबंध में हम हमेशा कोई न कोई निर्णय लेते रहते हैं। ये निर्णय दो प्रकार के होते हैं:

प्रोग्राम्ड डिसीज़न हमारे दिन- प्रतिदिन किए जाने वाले कार्य हैं, जो हमारे कार्यालय या हमारे घर की व्यवस्था में निहित होते हैं और जिनके लिए हमें कोई विशेष मनन नहीं करना पड़ता। एक संगठन में सामान्य पत्र या सूचनाओं की आवाजाही, एक घर में रोज़मर्रा के कार्य और उनके लिए आवश्यक प्रबंध इस श्रेणी में आते हैं।

दूसरी ओर नॉन- प्रोग्राम्ड डिसीज़न लीक से हटकर किए जाने वाले कार्यों से संबंधित होते हैं, जिनके लिए किसी विशेष विचार या व्यवस्था की आवश्यकता पड़े, जैसे किसी विशेष प्रकार की लेखापरीक्षा से संबंधित कार्य, किसी अति-विशिष्ट व्यक्ति का आगमन इत्यादि। व्यक्तिगत स्तर पर भी कई कार्यों में इस प्रकार के

निर्णय लेने होते हैं, जैसे – नया घर या कार खरीदना, कोई मेहमान घर पर आ जाए, कोई बीमार हो जाए।

प्रोग्राम्ड डिसीज़न में हमारे पास एक प्रक्रिया स्थापित होती है कि इस विशिष्ट परिस्थिति में हमें क्या करना है। हमारे आसपास के लोगों को, घर में या कार्यालय में, यह पता होता है कि इस परिस्थिति में क्या किया जाना अपेक्षित है।

नॉन- प्रोग्राम्ड डिसीज़न वाले मामले प्रायः अनूठे होते हैं और इनका पूर्व का कोई उदाहरण सामान्यतः हमारे पास नहीं होता। इस प्रकार के मामलों में हमें मनन एवं विचार-मंथन के पश्चात कोई निर्णय लेना पड़ता है।

2. सैटिस्फाइसिंग डिसीज़न

सैटिस्फाइसिंग शब्द सैटिस्फैक्टरी तथा सफाइसिंग से मिलकर बना है जिसका तात्पर्य है संतोषजनक तथा पर्याप्त। यह शब्द हर्बर्ट साइमन ने ही 1956 में गढ़ा था।

साइमन का विचार है कि तमाम कारणों, जैसे समय का अभाव या पर्याप्त संसाधनों का अभाव, से कई बार सर्वश्रेष्ठ निर्णय लेना संभव नहीं होता। इन परिस्थितियों में हमें ऐसा निर्णय करना चाहिए जो उपलब्ध समय एवं संसाधनों की सीमा में हो तथा ऐसा परिणाम प्रदान करे जो संतोषजनक तथा पर्याप्त हो। इस प्रकार के निर्णय सैटिस्फाइसिंग डिसीज़न कहलाते हैं।

3. बॉउन्डेड रेशनालिटी (सीमित तर्क संगतता)

यह सिद्धांत इस अवधारणा पर आधारित है कि किसी प्रबंधक द्वारा किसी समस्या के समाधान में तर्कसंगतता की एक सीमा होती है। यह सीमा कई कारणों से हो सकती है। जैसे- निर्णय लेने वाले को किसी समस्या के सभी विकल्प समाधानों का ज्ञान न हो, या उसे उन निर्णयों के परिणामों का सम्पूर्ण ज्ञान न हो। इन कारणों से हर निर्णय, चाहे वह कार्यालय में लिया गया हो, या घर में, की तर्कसंगतता सीमित होती है एवं निष्कलंक या सर्वश्रेष्ठ निर्णय होने का संतोष हो पाना प्रायः संभव नहीं होता।

इन सिद्धांतों से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि:

- कार्यों के लिए एक व्यवस्था निर्धारित करें जो व्यक्ति-आधारित न होकर वस्तु -आधारित हो। अधिक से अधिक निर्णयों को नॉन-प्रोग्राम्ड से प्रोग्राम्ड की ओर ले जाएँ, जिस से कम श्रम एवं समय में अधिक कार्य हो सकता है एवं निर्णय लेने वाले व्यक्तियों के समय को अधिक उपयोगी या महत्वपूर्ण निर्णयों में उपयोग किया जा सकता है।

- नॉन- प्रोग्राम्ड डिसीज़न लेने के अवसर जितने कम होंगे, किसी भी कार्य में कुछ ग़लत हो जाने या वांछित परिणाम न मिल पाने का खतरा उतना काम होगा।

- कोई भी कार्य या निर्णय पहली बार नॉन- प्रोग्राम्ड हो सकता है। उन परिस्थितियों में लिए गए निर्णयों से मिली सीख के आधार पर हम एक प्रक्रिया निर्धारित कर सकते हैं जो भविष्य में उस प्रकार की परिस्थितियों में हमारा मार्गदर्शन करेगी। इस प्रकार अधिक से अधिक निर्णयों को प्रोग्राम्ड बनाया जा सकता है।

- किसी भी कार्य को प्रारंभ करने से पूर्व उपलब्ध संसाधनों एवं समय का मूल्यांकन करें। संसाधनों एवं समय की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए ऐसा निर्णय करें जो पर्याप्त हो एवं संतोषजनक हो। यदि समय एवं संसाधन उपलब्ध हों तो निर्णय को सर्वश्रेष्ठ की ओर ले जाएँ।

- किसी भी निर्णय पर पहुँचने से पहले सभी विकल्पों पर विचार करें, उन निर्णयों के परिणामों पर विचार करें, एवं अपने सर्वश्रेष्ठ ज्ञान के अनुसार समयानुसार एक निर्णय करें। सर्वश्रेष्ठ निर्णय ही लेना है, का विचार करते-करते किसी भी निर्णय पर न पहुँचने की परिस्थिति से यथा-संभव बचें।

इन सिद्धांतों को हम अपने कार्यस्थल पर और अपने व्यक्तिगत जीवन में प्रयोग में ला सकते हैं जिससे हमारा जीवन सुगम बन सकता है और कार्यकुशलता में वृद्धि हो सकती है।

सर्वश्रेष्ठता की होड़

सुखदेव गोयल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

दुनिया तरह-तरह के प्राणियों और रहस्यों से भरी पड़ी है। सदियों से इन रहस्यों को सुलझाने हेतु मानव सदैव आतुर रहा है लेकिन अब भी हज़ारों रहस्य मानव के लिए कौतूहल भरे ही रह गये हैं। मानव को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ बुध्दिमान प्राणी समझा जाता है। जीवन की इस छोटी अवधि में तरह-तरह के जतन करके मानव यह दिखाने की कोशिश करता है कि इस धरती पर सिर्फ़ उसी का अधिकार है। हद तो तब पार हो जाती है जब यह देखा जाता है कि मानव और मानव के बीच ही प्रतिस्पर्धा का नकारात्मक माहौल तैयार किया जा रहा है। कुछ हद तक यह कहना भी उचित है कि प्रतिस्पर्धा हमें आगे बढ़ने हेतु प्रेरित करती है लेकिन यदि यही प्रतिस्पर्धा जब सर्वश्रेष्ठता की होड़ बन जाती है तो यह एक विभीषिका के रुप में उभर कर सामने आती है।

जीवन को जन्म से लेकर मृत्यु तक अनवरत प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जा सकता है लेकिन भौतिकवादी युग में जीवन के उद्देश्य को संकीर्ण रूप से युवा पीढ़ी के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। आधुनिक समाज में सर्वश्रेष्ठता की होड़ बच्चों से लेकर अधेड़ उम्र तक के नागरिकों को प्रभावित कर रही है। इसके कई सारे दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं। बच्चों में तनाव, कुंठा और नकारात्मक विचारों के हावी होने का प्रमुख कारण ही अपने आपको सर्वश्रेष्ठ साबित करने की होड़ को माना जा सकता है। हर प्राणी की अपनी-अपनी योग्यताएं और सीमाएं होती है लेकिन हर किसी को एक ही कसौटी पर कस कर इस सर्वश्रेष्ठता की होड़ में धकेल दिया जाता है।

सर्वश्रेष्ठ साबित करने की होड़ सिर्फ समाज तक ही सीमित नहीं है, इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बखूबी देखा जा सकता है। विकासशील देशों के बीच अपनी सैन्य ताकत, परमाणु शक्ति आदि बढ़ाने हेतु होड़ लगी रहती है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर

तरह-तरह के अनैतिक अनुसन्धान और प्रयोग किये जा रहे हैं जिसके फलस्वरूप हम नित नई-नई घातक बीमारियों का सामना कर रहे हैं।

प्रसिध्द फ्रांसीसी मनोवैज्ञानिक जेम्स डी. वाटसन के व्यवहारवाद सिध्दांत के अनुसार एक शिशु को जैसा माहौल मिलता है उसी के अनुसार वो अनुक्रिया करना शुरू कर देता है। वाटसन ने कहा था कि **"तुम मुझे एक सामान्य बालक दो मैं उसे जो तुम चाहो चोर, वकील , चिकित्सक,आदि बना सकता हूँ ।"** यह सिध्दांत सिर्फ़ अपने चारों तरफ के माहौल के प्रति अपनी अनुक्रिया को दर्शाता है। सिगमंड फ्रायड के अनुसार सामान्य मानव "इदम, अहम तथा पराहम" के मनो विश्लेषणात्मक सिध्दांत के अनुसार भी अपना "ईगो" संतुष्ट करने हेतु स्वयं को सर्वश्रेष्ठता की होड़ में धकेल देता है ।

अंततः यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आधुनिक भौतिकवादी युग में माहौल के प्रति होने वाली अनुक्रियाओं के कारण ही सर्वश्रेष्ठता की होड़ बढती ही जा रही है। आध्यात्मिकता के प्रति झुकाव, अच्छे संस्कार, जागरूकता तथा मनोवैज्ञानिक शिक्षा से ही इस होड़ से आधुनिक समाज को और भावी पीढ़ी को बचाया जा सकता है जो कि नितांत आवश्यक है।

गणतंत्र दिवस – 2022 के अवसर पर कार्यालय की आंतरिक सजावट

मिली हुई कविता (फ़ाउंड पोएट्री)

सुव्रत रॉय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

एन लेमोट ने अपनी पुस्तक बर्ड बाई बर्ड में कहा है – "यदि आपकी भावनाओं के अंदर कुछ वास्तविक है तो हम शायद इसे दिलचस्प पाएंगे और शायद यह सार्वभौमिक होगा"। इसलिए आपको वास्तविक भावनाओं को अपने काम के केंद्र में रखने का जोखिम उठाना पड़ेगा। कविता लेखन अपने हृदय की भावनाओं को प्रकट करने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम माना जाता है और इसलिए साहित्य की विभिन्न विधाओं में से यह एक लोकप्रिय विधा है।

कोरोना महामारी के अवसादपूर्ण समय के दौरान फाउंड पोएट्री (मिली हुई कविता) नामक कविता लेखन की शैली पुनः उभरकर सामने आई है। कविता लेखन की इस शैली में कवि अपनी कविता की रचना अन्य स्रोतों से उधार लिए हुए शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों से करता है। आवश्यकता होने पर नए शब्द भी जोड़े जाते हैं। ये विभिन्न स्रोत सामान्य दैनिक जीवन में व्यवहृत रसीद, ईमेल, समझौता पत्र, इत्यादि भी हो सकते हैं। इन उधार लिए हुए शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों को इस प्रकार से पुनः संयोजित किया जाता है कि पुनः संयोजन की यह प्रक्रिया इन शब्दों को नया अर्थ प्रदान करती है। इसलिए कविता लेखन की यह शैली कोलाज कविता या रीमिक्स कविता के नाम से भी जानी जाती है।

यदि कविता लेखन की इस शैली के प्रारंभिक इतिहास की बात करें तो यह शैली प्रथम विश्वयुद्ध के समय यूरोप में प्रचलित दादा कला आंदोलन से प्रभावित थी। इस कला आंदोलन ने साहित्य, दृश्य एवं श्रव्य माध्यमों सहित समकालीन कला की विभिन्न विधाओं को प्रभावित किया। फ्रेंच भाषा में दादा शब्द का अर्थ है - क्रीड़ाश्व (हॉबी हॉर्स)। इस आंदोलन के प्रणेताओं ने अपनी कला के माध्यम से समकालीन विश्व में व्याप्त हिंसा, युद्ध एवम उग्र राष्ट्रीयता का विरोध किया।

कविता लेखन की यह शैली हमारे देश में हाल के कुछ वर्षों में ज़्यादा लोकप्रिय हो रही है। कोरोना महामारी से उत्पन्न हुए अवसादपूर्ण माहौल में कविता लेखन ने लोगों को आशावादी बने रहने में मदद की है। इस शैली के समर्थकों का यह दृढ़ विश्वास है कि कविता जीवन के हरेक क्षेत्र या पहलू में मौजूद है। यदि ज़रूरत है तो एक नए दृष्टिकोण की। क्वारेन्टीन और वर्क फ्रॉम होम की ज़िंदगी में कविता लेखन ने लोगों को एक नयी उन्मुक्तता, एक नया आकाश प्रदान किया है।

कविता लेखन की यह शैली लोगों को अवसाद से उबारने का भी काम करती है क्योंकि यहाँ सही एवं सटीक शब्दों का चयन कवि का पूर्णतः निजी दायित्व नहीं होता है। वह काफी हद तक दूसरे स्रोतों से उधार लिए हुए शब्दों पर निर्भर करता है। ये उधार लिए हुए शब्द ही कवि के हृदय की भावनाओं के वाहक बन जाते हैं। ये कवितायें कभी मुक्त छंदों का रूप लेती हैं और कभी हायकू का। ये कविताएं, भले ही उधार लिए हुए शब्दों से बनी हों , कवि और पाठक दोनों के जीवन को एक नयी चेतना, एक नए सौंदर्यबोध से भर देती हैं ।

गणतंत्र दिवस – 2022 के अवसर पर कार्यालय की आंतरिक सजावट

फ़ोटो प्रेम

हिमांशु धर्मदर्शी
प्रधान महालेखाकार

कुछ समय पहले एक मराठी फिल्म देखी। फोटो प्रेम।

कितना असाधारण विषय!

वानप्रस्थ में प्रवेश कर चुकी, 54-55 साल की एक महिला को उसका पति, एक दिन अचानक अपने दोस्त के घर ले जाता है। दोस्त की पत्नी का हाल ही में निधन हो गया है। घर में उस का निर्जीव शरीर रखा है, और कोई क़रीबी स्वजन के घर आने का इंतजार हो रहा है।

इसी सिलसिले में घर के लोग प्रेस में विज्ञापन देने के लिए कोई फ़ोटो ढूंढ रहे हैं। फ़ोटो नहीं मिल रहा है, क्योंकि अब तक महिला का कोई फ़ोटो लिया ही नहीं गया। पार्थिव शरीर के पास टीपॉय पर बचपन की एक धुंधली सी तस्वीर रखी है, जो अवसर के अनुरूप नहीं लग रही। ऐसे समय लोग आमतौर पर उस व्यक्ति के बारे में बात करते हैं, जो चला गया है। एक वाचाल महिला कहती है अरे, (कैसी महिला थी) इसकी कोई अच्छा फ़ोटो नहीं है?

बस यह एक वाक्य इस महिला को झकझोर देता है, उसे सोचने पर मजबूर कर देता है। अरे, मेरे पास कोई अच्छी फ़ोटो ही नहीं? सचमुच उसके पास अपनी कोई अकेली फ़ोटो नहीं है क्योंकि उसे फ़ोटो खिंचवाना पसंद नहीं है। और जो फ़ोटो हैं, वो या तो गुप फ़ोटो हैं या ऐसी हैं कि उन्हें ऐसे मौके पर न तो फ़्रेम किया जा सकता है और न ही प्रिंट किया जा सकता है। अपनी ख़ुद की बेटी की शादी के मौके पर भी वह फ़ोटो खिंचवाने के मौके से भाग जाती।

मेरे मरने के बाद लोग आएंगे, तो क्या कहेंगे?

बस यह चिंता उसे खा जाती है। वह रोज़-रोज़ अखबारों में विज्ञापन पढ़ने लगती है। मृत व्यक्तियों की फ़ोटो देखती है और उन्हें अच्छा या बुरा कहने लगती है। हद तब होती है जब वह विज्ञापन पढ़ कर किसी अजनबी के घर चली जाती है और

खासकर उनकी तस्वीरें देखने के लिए। वह शोक सभा में हिस्सा भी लेने लगती है। वह लोगों की प्रतिक्रिया देखती है और मन ही मन तय करती है कि किस तरह की फ़ोटो होनी चाहिए।

अपनी अच्छी फ़ोटो के लिए वो स्टूडियो तक जाती है पर बिना फ़ोटो खिंचवाए ही वापस लौट आती है। वह कंप्यूटर में वेबकैम पर अपनी विभिन्न तस्वीरें अपलोड करती है लेकिन उसे एक भी फ़ोटो पसंद नहीं आती। अंत में, वह एक पेशेवर फोटोग्राफर के सामने आत्मसमर्पण कर देती है। पैसों का ढेर देकर वह अपनी एक अच्छी पसंदीदा फोटो बनवा लेती है।

यह खूबसूरत बढ़िया फोटो उसकी मौत के बाद लिविंग रूम में टंगी है। फोटो सच में अच्छी है, किसी कलाकृति जैसी यह तस्वीर किसी आर्ट गैलरी की शोभा बढ़ाए, इतनी सुंदर है। उसे किसी प्रतियोगिता में शायद पुरस्कार भी मिल सकता है।

लेकिन यह क्या?

फ़्रेम में वह एक अलग महिला दिखाई देती है। जो कभी मध्यमवर्गीय गृहिणी हुआ करती थी, वह कहीं गायब हो गई है। उसकी आंखों में चमक है, खूबसूरत साड़ी में वह किसी रानी की तरह दिखती है। लेकिन इसमें उसका सादा व्यक्तित्व उभर नहीं रहा। फोटो की महिला वह नहीं है, जिसे इतने सालों से लोगों ने देखा है। फ़ोटो में दिख रही महिला बेहद अलग दिख रही है, यहां तक कि उसकी अपनी बेटी और पति को भी...

कितने अफ़सोस की बात...

फिल्म हमारे अन्तर्मन को उजागर करती है। दूसरों के सामने अच्छा दिखने की चाहत, बस इसी के कारण अरबों रुपये का सौन्दर्य प्रसाधन का व्यवसाय चल रहा है।

हम अपना सारा जीवन लोगों को अपनी नज़र के सामने रखकर जीते हैं। ज़िंदगी हमारी है पर हम दूसरों के लिए जीते हैं!

दूसरे की पसंद, दूसरे के विचार, दूसरे की राय...

लोग क्या कहेंगे? लोगों को कैसा लगेगा?

हम दूसरों के सामने अच्छा दिखने का भरसक प्रयास करते हैं और होता यह है कि उन्हें हमारा यह रूप पसंद नहीं आता। इस व्यर्थ प्रयास में अंतत: ऐसा होता है कि हम अपना व्यक्तित्व, अपनी पहचान, अपना अस्तित्व खो देते हैं....

मेरे जीवन में भी एक ऐसा अवसर आया था। एक रात माँ अचानक चली गई। एक दोस्त जो घर तुरन्त भागकर आया, उसने कहा कि कोई अच्छी फ़ोटो दीजिये जिसे शोक सभा के लिए फ़्रेम करवा कर ले आयें।

माँ की तबीयत दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही थी, और वे धीरे-धीरे मौत के मुंह में जा रही थीं, यह मुझे रोज़ दिख रहा था। अचानक एक दिन मेरे साथ आखिरी बातचीत कर के वे अनंत की यात्रा पर चल पड़ीं।

पिछले कुछ दिनों से उनके साथ रहने के तुरंत बाद, उस क्षण उनकी फ़ोटो ढूंढना मेरे लिए एक मुश्किल काम है। भतीजी की शादी के एल्बम से भाई को एक मुस्कुराती हुई फ़ोटो मिल जाती है, जो सभी को पसंद आती है। मेरी राय पूछी जाती है और मैं अनजाने में औपचारिक रूप से हां कह देता हूं।

कौन जाने क्यूँ, लेकिन मैं यह सब समझ नहीं पाता। जब किसी का अपना, एक बहुत ही व्यक्तिगत, जीवन का एक विशेष हिस्सा, हमेशा के लिए छोड़ जाता है, तब कोई इतना व्यवहारिक कैसे हो सकता है? सच कहूं तो मुझे इसकी ज़रूरत भी महसूस नहीं होती।

जब मैं मौजूद नहीं हूँ, तो फिर मेरी फ़ोटो होने या न होने से क्या फ़र्क पड़ता है? जो मुझे जानता है वह मुझे आंखें बंद करके भी देख सकता है। जो मुझे नहीं जानता, उसे मेरी गैरमौजूदगी में, मेरी पहचान कराने की जरूरत है क्या?

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) तथा प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा(केन्द्रीय) द्वारा कोविड-19 के दौरान किए गए उत्कृष्ट कार्य के लिए अधिकारियों और कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए

टांगलिया बुनाई शिल्प

700 साल पुराना यह बुनाई शिल्प मूल रूप से सुरेंद्रनगर, गुजरात के डांगशिया समुदाय का शिल्प है। समुदाय में बुनकर और चरवाहे शामिल हैं। बुनकर चरवाहों के पहनने के लिए भेड़ और बकरी की ऊन से कंबल, दुपट्टे, पोशाक हेतु सामग्री, चादरें और तकिए के कवर बनाते हैं। धागों को बुनाई तकनीक की विशिष्ट शैली से बुना जाता है जिसमें कपड़े पर उभरे हुए बिंदुओं का प्रभाव होता है। इसे दाना काम के रूप में भी जाना जाता है।

एक पारंपरिक शॉल बनाने के लिए, कपड़े के एक लंबे टुकड़े को दो भागों में काटा जाता है और फिर किनारों को एक साथ सिला जाता है। आजकल टांगलिया का काम महीन कपास में किया जाता है और इसे विभिन्न प्रकार के उत्पादों को बनाने के लिए उपयोग किया जाता है। वर्ष 2009-10 में टांगलिया शॉल को जी. आई. टैग प्रदान किया गया।

कवांट मेला

कवांट मेला उत्तर-पूर्व गुजरात का एक मुख्य आदिवासी मेला है जो प्रतिवर्ष होली के बाद लगता है। कवांट गाँव वडोदरा से लगभग 100 किलोमीटर की दूरी पर छोटा उदेपुर शहर के पास स्थित है। यहाँ होने वाले मेले में मुख्यतः राठवा समुदाय के लोग हिस्सा लेते हैं।

मेले का मुख्य आकर्षण एक पारंपरिक नृत्य है जिसमें ढोल तथा बाँसुरी की धुन पर लयबद्ध तरीके से पैरों की थाप दी जाती है। पुरुष कमर में पीतल की घंटियों की पेटी पहनते हैं जिससे सुंदर ध्वनि उत्पन्न होती है। स्थानीय लोग एक शंक्वाकार टोपी पहनते हैं जिसमें स्थानीय देवी-देवताओं के चित्र तथा मोरपंख लगे होते हैं।

स्थानीय लोग चावल तथा राख मिश्रित करके रंग बनाते हैं जिसे शरीर पर वृत्ताकार एवं बिंदुओं के रूप में लगाया जाता है। सभी लोग इकट्ठा होकर मानवीय पिरामिड भी बनाते हैं।